निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष ६ अंक १८ | मार्च-अप्रैल १९८५

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्रार स्वामिनी,
मोक्ष प्रदायिनी, माता जी, श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

★ निर्मल वाणी ★

१. भयंकर से भयंकर बीमारियाँ सहजयोग से ठीक होती हैं। परन्तु बीमारी ठीक होने के बाद लोग सहजयोग को सहजता से लेते हैं। ऐसे लोगों को बीमारी ठीक होने के लिए सहजयोग और माताजी चाहिए ! ऐसे लोगों को सहजयोग क्यों ठीक करे ? जो परमात्मा का दीप नहीं बनना चाहते, परमात्मा का संयंत्र नहीं बनना चाहते, ऐसे लोगों को परमात्मा ने ठीक भी किया तो उनसे इस दुनिया को प्रकाश नहीं मिलेगा।

जिस मनुष्य में सहजयोग का कार्य करने की इच्छा है, जिस मनुष्य में दीप बनने का सामर्थ्य है, ऐसे ही लोगों की परमात्मा मदद करेंगे और ऐसे ही दीप जलाएंगे जिनसे इस पूरे विश्व में प्रकाश फैलेगा।

❋ ❋ ❋

२. श्री कल्की चक्र ठीक रखने के लिए सर्वप्रथम मनुष्य में परमात्मा के प्रति अत्यंत आदर, प्रेम व आदरयुक्त भय (awe) होना जरूरी है।

❋ ❋ ❋

३. अपने में निर्विचारिता कैसे आएगी और वह ज्यादा से ज्यादा समय कैसे टिककर रहेगी इसका सहजयोगियों को ध्यान रखना है।

❋ ❋ ❋

४. पूजा के समय अगर आप निर्विचार होंगे तो मानना कि हृदय ने साथ दिया। पूजा सामग्री एकत्रित करके सरल-सीधे मन से अर्पण कीजिए। उस समर्पण में दिखावा नहीं चाहिए। कोई भी conditions (बंधन) नहीं चाहिए। पानी से हाथ धोते हो, हृदय तो नहीं धोए ? अपना चित्त जब हृदय पर होगा तब वह दूसरों को नहीं सोचेगा।

❋ ❋ ❋

५. आपने बाहर से मौन धरा है लेकिन अंदर से आप सोच विचार कर रहे हैं। इसलिए बहुत देर तक गूंगे की तरह नहीं बैठना चाहिए। मनुष्य का हृदय जब साफ नहीं होगा तो ऐसे गूंगेपन से बहुत नुकसान होता है। उसके विपरीत बहुत ज्यादा इधर-उधर की ऊटपटांग बातें भी बहुत नुकसानकारक हैं।

सम्पादकीय

हर क्षेत्र में अनुशासन का अपना महत्व है। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी इसे नकारा नहीं जा सकता है।

अनुशासन सहजयोग का भी एक अंग है। अंतर इतना अवश्य है कि सहजयोग में अनुशासन स्वयं का अन्दर से होना चाहिए, बाह्य से थोपा हुआ नहीं।

श्री माताजी ने भी अनुशासन पर काफी बल दिया है।

हम सभी सहजयोगी अनुशासन-बद्ध होकर ही प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं।

श्री माताजी की आज्ञा का अनुसरण करना ही हमारा अनुशासन होगा।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर. डी. कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : लोरी हायनेक
३१५१, होदर स्ट्रीट
वैन्कूवर, बी. सी.
वी ५ जैड ३ के २

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पैट्रूनीया
२७०, जे स्ट्रीट, १/सी
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत श्री एम. बी. रत्नान्नवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवाला लेन, बोरीवली
(पश्चिमी) बम्बई-४०००९२

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विस लि.,
१३४ ग्रेट पोर्टलैण्ड स्ट्रीट
लन्दन डब्ल. १ एन. ५ पी. एच.

इस अंक में ..... पृष्ठ

१. सम्पादकीय ... १
२. प्रतिनिधि ... २
३. परमपूज्य माताजी का प्रवचन ... ३
४. त्यौहार ... १३
५. कुण्डलिनी और श्री गणेश पूजा ... १४
(परमपूज्य माताजी के मराठी भाषण का हिन्दी अनुवाद)
६. निर्मल वाणी ... द्वितीय कवर

।। जय श्री माता जी ।।

धर्मशाला
३१-३-८५

धर्मशाला के मातृभक्तों को मेरा प्रणाम् !

यहाँ के मन्दिर की कमेटी ने ये आयोजन किया, जिसके लिए मैं उनका बहुत धन्यवाद मानती हूँ। असल में इतना सत्कार और आनंद, दोनों के मिश्रण से हृदय में इतनी प्रेम की भावना उमड़ आयी है कि वो शब्दों में ढालना मुश्किल हो जाता है। कलियुग में कहा जाता है कि कोई भी माँ को नहीं मानता। ये कलियुग की पहचान है कि माँ को लोग भूल जाते हैं। लेकिन अब ऐसा कहना चाहिए कि कलियुग का समय बीत गया, जो लोगों ने माँ को स्वीकार किया है।

माँ में और गुरू में एक बड़ा भारी अन्तर मैंने पाया है, कि माँ तो गुरू होती ही है, बच्चों को समझाती है, लेकिन उसमें प्यार घोल-घोल कर इस तरह से समझा देती है कि बच्चा उस प्यार के लिए हर चीज करने को तैयार हो जाता है। ये प्यार की शक्ति, जो सारे संसार को आज ताजगी दे रही है, जो सारे जीवन्त काम कर रही है, जैसे ये पेड़ का होना, उनकी हरियाली, उसके बाद एक पेड़ में से फूल हो जाना और फूल में से फल हो जाना, ये जितने भी कार्य हैं, जो जीवन्त कार्य हैं, ये कौन करता है ? ये सब करने वाली जो शक्ति है वो परमात्मा की प्रेम की शक्ति है। उसी को हम आदि-शक्ति कहते हैं।

परमात्मा तो सिर्फ नजारा देखते हैं कि उनकी शक्ति का कार्य कैसे हो रहा है ? जब उनको वो कार्य पसन्द नहीं आता तो वो आँख मूंद लेते हैं और सारा नजारा भी खत्म हो जाता है। परवाह तो माँ को करनी पड़ती है कि मेरे बच्चे ठीक से रहें। संसार एक बड़ा सुन्दर आलीशान ऐसा विशेष रूप का आदर्श हो कि जिसे देखकर परमात्मा संतुष्ट हो जाएं, ये पूरा प्रयत्न होता रहता है। लेकिन आप जानते हैं कि हर बार ऐसे प्रयत्न हुए। अनेक अवतार इस संसार में आए और अनेक प्रयत्न हुए। लेकिन मनुष्य की अक्ल उलटी बैठ जाती है। कोई बात उसे बताओ "नहीं करो", तो वो जरूर वही काम करता है।

अभी आपसे योगी जी ने कहा कि आप शराब मत पीना, अगर आप माँ के भक्त हो। लेकिन ऐसा कहने से और ज्यादा ही पीना शुरू कर देंगे। मैंने देखा है कि बच्चों से कोई चीज मना करो तो वे डबल(दोगुना)करते हैं, कि क्यों मना किया इसीलिए हम करेंगे, अहंकार की वजह से। इसका बेहतर तरीका मैंने सोचा कि इनके अन्दर ज्योत जला दो— चाहे वो टिमटिमाती क्यों न हो। थोड़ी-सी ही ज्योत जल जाएगी तो उस ज्योत के प्रकाश में खुद ही देखेंगे कि हमारे अन्दर क्या दोष हैं ? अगर समझ लीजिए आप हाथ में साँप पकड़े हैं और कोई कहे कि भई तुम तो रस्सी की जगह साँप पकड़े हो छोड़ दो। तो कहेंगे कि, "नहीं, मैं तो इसको पकड़े ही रहूँगा।" वो मनुष्य की बुद्धि हुई ना ! लेकिन उस वक्त अगर कोई उसके सामने ज्योत दिखा दे तो देखे कि साँप है तो उसको अपने आप ही छोड़ दे।

इसलिए आज का हमारा जो सहजयोग है, उसमें आपकी पहले कुण्डलिनी हम जगा देते हैं, चाहे आप कैसे भी हों, कुछ भी आपके तरीके हों, कोई भी आप गलत रास्ते पर हों, कुछ भी करते हों। उसके जगने के बाद फिर आप अपने ही आप ठीक हो जाते हैं। कुछ कहने की माँ को जरूरत नहीं पड़ती। क्योंकि आप खुद ही देखते हैं कि ये कैसी चीज है ?

अब शराब ही की बात देखिए कि विलायत में तो आप जानते हैं कि लोग हर रोज सुबह-शाम शराब पीते रहते हैं। बहुत ही शराबी लोग हैं। और उनका जीवन भी बड़ा ही अधर्मी है। हम लोग उनसे बहुत ऊँचे किस्म के लोग हैं। हमारे अन्दर माँ-बहन है। हम बहुत धर्म समझते हैं। शराब आप अब पीने लग गये थोड़ी-बहुत, वो दूसरी बात है, बाकी हम लोगों में बहुत धर्म है। उन लोगों को, जब उनको जागृति हो जाती है, तो वो दूसरे ही दिन सब छोड़-छाड़ के खड़े हो जाते हैं। कुछ मैं उनसे कहती नहीं। मैंने शुरू से ही ऐसा रवैया ही नहीं रखा कि कहो कि शराब मत पियो, जुआ मत खेलो, नहीं तो आधे लोग वैसे ही उठ के चले जाएं वहाँ—आधे से ज्यादा ही। यहाँ तो कम से कम ये हाल नहीं होगा। इसलिए मैं कहती हूँ, कुछ नहीं, जैसे भी हो बैठे रहो। तुम्हें जागृति मुझे बस देने दो। जागृति देने से उनका अहंकार भी टूटता है और उनके अन्दर जो आदतें बैठी हुई हैं, वो भी टूट जाती हैं। अपने आप वो आदतें छूट जाने से वो समर्थ हो जाते हैं।

असल में बहुत से लोग मन से तो सोचते हैं कि खराब काम है, लेकिन उसे छोड़ नहीं पाते। उसकी वजह ये है कि कोई आदत पड़ गयी, तो एक माँ की दृष्टि ये है कि जब बच्चे को आदत पड़ गयी तो उसको किस तरह से छुड़ानी चाहिए। उसको डांटने से, फटकारने से, मना करने से तो छूटेगी नहीं। तो किस तरह से ? एक माँ सोचती है कि चलो इसके अन्दर एक दीप क्यों न जला दें। इसके अन्दर अगर दीप जल गया तो उस दीप में ये स्वयं ही देख लेगा कि, "जो मैं ये कार्य करता रहा हूँ ये मेरे लिए इतना हानिकारक है।" और वो समर्थ हो जाय कि इस हानिकारक चीज को वो छोड़ दे, तो फिर कोई सवाल ही नहीं उठता। उसको कुछ कहने की जरूरत नहीं, उससे कोई झगड़ा मोल लेने की जरूरत नहीं। कहते ही साथ वो चीज अपने ही आप छूट जाती है। ऐसे ही चीज होना चाहिए।

आज हम उस कगार पर पहुँच चुके हैं कि अगर हमें आत्म-बोध नहीं हुआ, हमने अगर अपने आत्मा को नहीं जाना, तो हमारा सबका सर्वनाश हो सकता है। ये बात बिल्कुल सही है, क्योंकि कलियुग अब पूरी चरम सीमा में पहुँच गया है। कुछ तो बीमारी से होगा। बहुत से लोग ऐसी-ऐसी बीमारियों में फंस जाएंगे कि उससे बच नहीं पाएंगे। बहुत विध्वसक चीजों से हो सकता है। न जाने कितनी चीजें हमने अपने को नष्ट करने की जोड़ ली हैं।

हम लोग सोचते हैं परदेस में लोगों के पास पैसा बहुत ज्यादा है, तो वो बड़े सुखी जीव होंगे। बिल्कुल भी सुखी नहीं हैं, आपसे बहुत दुखी जीव हैं। आपसे बहुत ज्यादा दुखी हैं। क्योंकि उनके यहाँ न कोई समाज है, न कोई माँ है, न कोई भाई है, न कोई बहन है। आप सोचिए कि आपके पास बहुत सारा धन दे दें और आपसे कहें कि आप अकेले कहीं लटके रहिए, तो आप क्या सुखी रहेंगे ? ऐसी उनकी हालत है। इतना पैसा होने पर भी वो सब लोग कोशिश ये करते हैं कि हम आत्महत्या कैसे करें ? आपको आश्चर्य होगा। उनके बच्चे ये ही सोचते रहते हैं कि हम कैसे आत्महत्या करें ?

तो ये बात हम जो समझते हैं कि पैसा होने से सब हो जाएगा, सो बात नहीं। लेकिन पैसा भी होना चाहिए। उसके लिए भी कुण्डलिनी का जागरण ठीक है, क्योंकि अपने अन्दर देवी, जो लक्ष्मी जी हैं, वो भी बसती हैं। जब हमारी कुण्डलिनी

नाभि पर आ जाती है, जब हमारी लक्ष्मी की कुण्डलिनी खुल जाती है, तो हमारे अन्दर वो जागृति आ जाती है, जिससे लक्ष्मी जी का स्वरूप हमारे अन्दर प्रकट हो जाता है।

अब जिन्होंने सोच के लक्ष्मी जी बनायीं वो भी बहुत सोच-समझ के बनायी हैं कि लक्ष्मी जी जो होती हैं, जो लक्ष्मीपति होता है, वो एक माँ स्वरूप होना चाहिए। आजकल तो जिसके पास पैसा आ जाता है वो तो राक्षस स्वरूप हो जाता है। इसका मतलब पैसा पाना लक्ष्मीपति होना नहीं है। दूसरे उनके एक हाथ में दान है, एक हाथ में आश्रय है, एक हाथ से वो देती हैं और दूसरे हाथ से लोगों को आश्रय देना चाहिए। दूसरे जो दो हाथ हैं, उसके अन्दर कमल के गुलाबी फूल हैं। माने उनका रहन-सहन, उनकी शक्ल-सूरत ऐसी होनी चाहिए जैसे कि कमल का पुष्प हो। और उनके अन्दर वैसी ही विचारधारा होनी चाहिए, वैसा ही स्वागत होना चाहिए जैसा कि एक कमल काटों वाले भौंरे की अपने यहाँ सोने की व्यवस्था करता है। कोई भी मेहमान उसके घर में आए, उसमें कितने ही कांटे हों तो भी उसकी आवभगत करे, उसको आराम दे, वही लक्ष्मीपति है। वो बिचारी इतनी सीधी-सरल है कि एक कमल ही पर खड़ी है। उसको कोई और चीज की जरूरत नहीं। सारे तरफ कीचड़ फैला है उसी में एक कमल के ऊपर खड़ी हुई लक्ष्मी जी, जिनको हम इतना मानते हैं, ऐसी देवी हमारे अन्दर जागृत हो जाती है, और उसके ये सारे लक्षण हमारे अन्दर दिखायी देते हैं।

श्रीकृष्ण ने साफ-साफ कहा था कि, "जब योग होगा तब मैं तुम्हारा क्षेम करूंगा। पहले योग को साधो।" लोग बड़ा-बड़ा लेक्चर (भाषण) देंगे, जिससे किसी के समझ में भी नहीं आएगा, सब सोचेंगे पता नहीं क्या बक रहे हैं? लेकिन सही बात ये है कि पहले योग को प्राप्त करें। जिसने योग को प्राप्त कर लिया वो समाधान में आ जाता है, उसके सारे प्रश्न अपने आप मिट जाते हैं।

कुण्डलिनी शक्ति जो हमारे अन्दर है, ये हमारी शुद्ध इच्छा है। बाकी जितनी हमारे अन्दर इच्छाएं हैं, जैसे कोई आएगी कहेगी, "माँ, मेरा बेटा नहीं।" चलो भई तुम्हारे बेटा हो जाएगा। बेटा हो गया। उसके बाद कहेगी कि, "माँ, बेटा तो हो गया, अब मुझे नाती चाहिए।" वो भी हो गया। "अब मुझे घर चाहिए", घर के बाद "वो चाहिए", उसके बाद "वो चाहिए।" इसका कोई अन्त ही नहीं है। इसका मतलब, हमारे अन्दर जो इच्छाएं हैं, वो इच्छाएं शुद्ध नहीं हैं।

शुद्ध इच्छा 'एकमात्र' है वो ये है कि हमें परमात्मा से एकाकार होने की एक, किसी तरह से, ये एक युक्ति जुट जाए। किसी तरह से ये काम बन जाए कि हम ये परमात्मा की जो चारों तरफ फैली हुई शक्ति है, जिससे सारा जीवन्त कार्य होता है, उससे हम एकाकार हो जाएं। यही हमारी शुद्ध इच्छा है और ये शुद्ध इच्छा की शक्ति ही कुण्डलिनी है, और जो आदिशक्ति जो कि परमात्मा की इच्छा है, उसी का ये प्रतिबिम्ब है। वही हमारे अन्दर छाया हुआ है। हमारे हृदय में जो आत्मा है, वो परमात्मा की छाया, और जो हमारी कुण्डलिनी त्रिकोणाकार अस्थि में है, वो परमात्मा की इच्छा की प्रतिबिम्ब है। उसकी जो इच्छा, जो आदिशक्ति है, उसकी छाया है, प्रतीक छाया है। इसको अगर आप समझ लें तो फिर आपकी समझ में आ जाएगा कि हम धर्म के नाम में भी कितने भटकाव में घूम रहे हैं। वही आदिशक्ति जो है, वही हमारी माँ है। हम सबकी अलग-अलग माँ है। हमारे अन्दर बसी हुई है। और ये माँ सब को ही वो प्रदान देती है जो कि कोई भी माँ नहीं दे सकती। क्योंकि ये आदिशक्ति जो है पावन मूर्ति परमात्मा की शक्ति है, जो हमारे अन्दर वो गुण दे देती है जो परमात्मा को प्रसन्न रखे और हमारे अन्दर वो सामर्थ्य दे देती है, वो शक्ति दे देती है जो परमात्मा के सामर्थ्य लगते हैं।

जैसे कि अब कोई कहता है कि, "माँ मुझे ये प्रश्न है।" अच्छा, हमने कहा तुम घर जाओ, ठीक हो जाएगा। घर जाते ही देखता है कि प्रश्न तो ठीक हो गया। माँ ने क्या चमत्कार कर दिया। कुछ चमत्कार मैंने किया नहीं। कोई बात मैंने की नहीं। क्या हुआ ? कि आपकी कुण्डलिनी मैंने जागरण कर दी।

कुण्डलिनी जो है वो किसी भी कारण और परिणाम से परे चीज है। कोई है, किसी से पूछा भई तुमको क्या परेशानी है ? हमारे पास पैसा नहीं इसलिए हम परेशान हैं। यही न ? कारण ये है कि पैसा नहीं है। और इसलिए आप परेशान हैं। लेकिन समझ लो आप कारण से परे ही चले जाएं, तो कारण भी खत्म हो गया और उसका परिणाम भी खत्म हो गया। यही चीज होती है जब हमें शारीरिक आधि-व्याधि रहती है। जब हमारे अन्दर शारीरिक आधि-व्याधि रहती है, तो हम सोचते हैं कि "इसलिए हमें जुकाम हो गया क्योंकि हम सर्दी में गये थे।" अच्छा ! लेकिन ऐसी भी कोई दशा होगी कि जहां जुकाम ही नहीं होता। "हमें इसलिए कैंसर हो गया क्योंकि हमने ये गलत काम किया।" या "हमें इसलिए ये बीमारी हो गई क्योंकि हमने ये बदपरहेजी करी।" लेकिन कोई ऐसा भी स्थान होगा जहां ये चीज होती ही नहीं। जहां आप गलती ही नहीं कर सकते, या जहां ये कारण ही नहीं बसते। इसको मेडिकल साइंस (चिकित्सा-शास्त्र) में parasympathetic nervous system (मध्य नाड़ी जाल) कहते हैं। लेकिन डॉक्टर लोग इसको समझने के लिए पहले सहजयोग को समझ लें, तब उसको समझ पाएंगे।

लेकिन आप लोग इसको बहुत आसानी से समझ सकते हैं। जिसे लोग चमत्कार कहते हैं कोई चमत्कार नहीं है। इसमें कोई चमत्कार नहीं है। हम तो रोज के चमत्कार को चमत्कार नहीं समझते। बताइये कि एक फूल से फल बनता है तो हम क्या बना सकते हैं ? नहीं बना सकते। और ऐसे हजारों, करोड़ों हम बनते देखते हैं, हमको कोई भी चमत्कार नहीं लगता। एक पहाड़ी का बच्चा पहाड़ी होता है। एक देसी का बच्चा देसी होता है। शक्ल-सूरत वैसी बनी रहती है, कौन बनाता है ? ये सोचिये इसका चयन कौन करता है ? ये किस तरह से बारीक से बारीक चीजें हजारों करोड़ों ऐसी चीजें संसार में होती हैं। वो जो शक्ति ये कार्य करती है, जब वो हमारे अन्दर बहने लग जाए तो फिर क्या हम समर्थ हो ही जाएंगे, हम शक्तिवान हो जाएंगे, शक्तिशाली हो जाएंगे।

इन पहाड़ों में देवी का स्थान है। आप जानते हैं कि आज रामनवमी का शुभ अवसर है। इस शुभ अवसर पर ही आप से मिलना था। कोई तो भी ऐसी ही विशेष बात होगी, जहां पर कि मुझे यहां आज ही आना था। यहां सात देवियों का स्थान है। सात देवियां अनेक बार आईं। उन्होंने आकर के युद्ध किये यहां। बहुत राक्षसों को मारा। बहुत दुष्टों को मारा।

आज भी मैं देखती हूं कि यहां बहुत से लोग तांत्रिक बनके और गुरू बनके और झूठ-मूठ करके घूम रहे हैं। उसके पीछे में आप लोग लग जाते हैं। वो लोग काली विद्या करते हैं। आप उस परेशानी में फंस जाते हैं। झूठ-मूठ के लोगों के पीछे में लग करके आपने अपना काफी नाश कर लिया। आप डाक्टर लोगों के पास जाइये, तो कहेंगे कि आपको कोई बीमारी ही नहीं है। लगता ही नहीं कि आपको कोई बीमारी है। लेकिन कमजोर आप हुए चले जा रहे हैं। घर में रोज कलह हो रहा है, झगड़ा हो रहा है। कुछ समझ नहीं आता है, बच्चों का मन पढ़ने में नहीं लगता है, चंचलता आ गई। सारी परेशानी कहां से आई ? सब इन तांत्रिकों के पीछे लगने से। इन झूठे गुरुओं के पीछे लगने से।

आपको पता होना चाहिए कि परमात्मा को पसा-वैसा कुछ समझ में नहीं आता है। आप ये जमीन है, इस जमीन को आप कहें कि मैं तेरे को दो पैसा देती हूँ तो मेरा इतना काम कर दे। उसको समझ में आएगा। आप उसमें एक बीज डाल दीजिए, अपने आप उसमें वृक्ष आ जाएगा। अंकुर आ जाएगा। उसके लिए कोई आपको वो जमीन के लिए कुछ मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। सिर्फ ये है की उसकी अपनी शक्ति है। उस शक्ति में जब बीज पड़ गया, तो अपने आप पनप गया। लेकिन आप ये सोचते हैं कि हम ये करें, वो करें, इसे करने से, उसे करने से भगवान खुश हो जाएंगे। ये बिल्कुल बात नहीं।

सिर्फ आपका परमात्मा में पूर्ण विश्वास और भक्ति होनी चाहिए। और ये जानना चाहिए कि परमात्मा हैं। चाहे आप माने या न माने, परमात्मा ये चीज है जो इतने 'हजारों' तरह के कार्य संसार में करते हैं। वो परमात्मा जरूर हैं। लेकिन उनको अभी तक आपने जाना नहीं। मां को देखे बगैर ही, जाने बगैर ही इतनी आपके अन्दर भक्ति है, तो क्या आपको मां मिलेगी नहीं? ऐसे कैसे हो सकता है? क्या मां के अन्दर हृदय नही है? क्या मां नहीं सोचती कि मेरे बच्चे मुझे याद कर रहे हैं? तो उनके पास जाना ही होगा। ऐसा तो कोई नहीं सोच सकता कि कोई मां को बुलावे और मां न आएं।

लेकिन दोष कभी-कभी ऐसा हो जाता है, समय समय का, कि मनुष्य गलत रास्ते पर चला जाता है। गलत रास्ते पर जाने पर वो कार्य नहीं बनता है। लेकिन जब समय आ जाता है तो जरूरी है कि जो आपने चाहा अपनी भक्ति में वो फलित होना ही है। और ये कार्य आप लोगों की कुण्डलिनी के जागरण के बाद जरूरी से करना है।

पहले तो बात ये है कि कोई भी तांत्रिक के पास जाने की जरूरत नहीं। यही आज का मर्दन है। आज के राक्षसों का मर्दन यही है कि सारे तांत्रिकों और सारे गुरुओं के पीछे मैं हाथ धोकर लगी हूं।

१९७० साल में मैंने खुले आम बम्बई में इन सब राक्षसों के नाम बताए थे कि सबने जन्म लिया हुआ है। इनसे बचकर रहें। एक-एक राक्षस चण्ड मुण्ड, सबने जन्म ले रखा हुआ है। और सारे गुरुओं के रूप में घूम रहे हैं और उनके पीछे हजारों पागल हैं।

जाने दीजिए, इन बेवकूफ लोगों को उनके पीछे जाने दीजिए। लेकिन जो अच्छे भले लोग हैं, जो सादे-सरल हृदय के लोग हैं, वो भी ऐसे चक्करों में फंस जाते हैं। और उनके घरों में कलह, उनके शरीर में क्लेश, आदि कितनी तकलीफें होती हैं। इसलिए इस चक्कर में बिल्कुल नही पड़ना चाहिए। कोई तांत्रिक आए, आपके यहां हाथ में डोरा बांधे, आप उसको कहना, "माफ करिए, मुझे डोरा नहीं बांधने का।" बहुत से लोग काशी से गंडा ले आते हैं। एक कौड़ी का कहीं से उठा लाए, और कहे काशी का गंडा है, बांधो इसे। काशी का गंडा आप बांध रहे हैं। उसका आपने दो रुपया ले लिया। अब आप बांध लिया, लेकिन आप क्या जानते हैं उसके अंदर कोई चीज बंधी हुई है जो आपको पकड़ लेगी। ये न तो डाक्टर पहचान सकता है, न कोई हकीम पहचान सकता है, न कोई वैद्य पहचान सकता है। ये तो वही पहचान सकता है कि जिसको आत्म बोध हो गया है। वो बता देगा आपको कि आपमें पकड़ आ गयी है।

और इस तरह की चीजें यहां पर बहुत हैं, मैंने आते ही साथ कहा कि अभी रात भर तो मुझे लड़ना है सबके साथ यहां पर, रात भर युद्ध होगा। तीन दिन से रात भर युद्ध हो रहा है। और यहां ऐसी बहुत सी गंदी, मैली विद्यायें करने वाले लोग छिपे बैठे हुए हैं और वो गांव में आकर के औरतों पर या आदमियों पर नजर डाल कर और

उनसे रुपया समेट रहे हैं। कोई कहेगा मुझे सिर्फ चावल दे दीजिए, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। मुझे ये चीज दे दीजिए, मुझे कुछ नहीं चाहिए। कभी भी आपने सुना है कि राम ने या कृष्ण ने किसी से भीख मांगी थी कि तुम मुझे चावल दे दो? या गंडे बांधे थे? या किसी से कहा था कि तुम ये नाम ले लो भगवान का तो तुम्हारा सब ठीक हो जायेगा? हमें नासमझी है, लेकिन नासमझी इतनी हद तक नहीं गुजरनी चाहिए कि हम भगवान में और शैतान में फर्क ही न कर सकें। हम ये भी न पहचान सकें कि ये शैतान है, ये तो राक्षस है। ये तो हमारे लिए एक बड़ा भारी दुष्ट आया हुआ है। हमारा मर्दन काल आया हुआ है, उसको न पहचाने और हम भगवान को न पहचाने। शक्ल-सूरत से आप पहचान सकते हैं कि ये राक्षसी आदमी है। उसके तौर तरीके से आप पहचान सकते हैं। क्योंकि आप इस वातावरण में रहते, आपके अंदर संवेदना है, आप समझ सकते हैं कि ये तो शैतान लगता है ये आदमी ठीक नहीं। उनके साथ बहू-बेटियाँ बैठेंगी, तो नुकसान पाएंगी। उनके साथ आदमी बैठेंगे, तो नुकसान पाएंगे। कभी भी आपके घर में तरक्की नहीं आएगी। ये सबसे बड़ी चीज यहां पर है और इसीलिए देवियां यहां पर हमेशा जन्म लेती रहीं।

लेकिन अब कलियुग में जो खराबी आ गयी तो ये है कि राक्षस ऐसे सामने खड़े हों तो उनकी गर्दनें काट के फिकवा दें। लेकिन वो तो ऐसे सामने खड़े नहीं हैं, सबके दिमाग में घुसे हुए हैं। सारे भक्तों के दिमाग में, बच्चों के दिमाग में अगर राक्षस घुस जाएं तो मां का क्या हाल होगा, ये सोच लो। आप ही सोचिए। क्या आप एक मां हैं या बाप हैं आप कितने परेशान हो जाएं? और ये ही आज दशा मैं देखती हूँ लोगों की, कि सादे, भोले, अच्छे लोगों पर ये चीज बड़ी छाती है। ये शौक आप छोड़ दीजिए। किसी गुरुओं के पास जाना, तांत्रिक के पास जाना, मांत्रिक के पास जाना, ज्योतिषी के पास जाना, ये सब चीजों को आप छोड़ दीजिए। अगर इसको आप छोड़ दें, तो आप सीधे ही परमात्मा के साम्राज्य में जा सकते हैं। कोई परेशानी नहीं होगी।

ये जो इस देश में रहने वाले लोग हैं, खासकर जो परदेश में रहने वाले लोग हैं, इनमें से कितने जाएंगे भगवान के दरबार में? बहुत कम। इनको तो मां के दरबार में आने की हिम्मत ही नहीं होने वाली। उसके लायक ही नहीं है। उसके योग्य ही नहीं हैं। उनका कुछ भी नहीं भला होने वाला। मैं आपसे बता रही हूँ। हालांकि मैं परदेश में मेरे पति हैं, वहां रहती हूँ, इतने सालों से मेहनत कर रही हूँ, सब बेकार। आप लोग मेरे अपने हैं। आप लोग मेरे जान के प्यारे हो। लेकिन आप लोग भी ऐसे गलत फहमी में फंसे हुए, इधर-उधर भटक गये हैं, तो एक मां के लिए कितनी आर्तता और कितनी परेशानी की बात है। ये सोच लेना चाहिए कि मां ने कहा है कि किसी तांत्रिक, किसी गुरु, किसी धंटाल के पास जाने की जरूरत नहीं। हम लोग गृहस्थ के लोग हैं। गृहस्थी के लोगों को गृहस्थी से सम्बन्ध रखना चाहिए। हमारा साधु-सन्यासियों से कोई मतलब नहीं। हम लोग कमाएं, हम यज्ञ कर रहे हैं, हम गृहस्थी में बैठे हुए हैं। क्या हमें चाहिए कि हमारा पैसा उठा के इन साधु सन्यासियों को दें? कोई जरूरत नहीं। एक बार सीता जी तक साधु-सन्यासी से फंस गयी थी और आप जानते हैं बेचारी को सारा रामायण उसके बाद रच गया। इसलिए इस चक्करों में बिल्कुल नहीं आने का। आप खास कर औरतों पर इनका ज्यादा असर आता है क्योंकि और ज्यादा सीधी सादी होती हैं। अपने बच्चों को, अपने घर को, अपने पति को इससे बचा कर रखिए।

हमारे यहाँ की समाज व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर है। आप नहीं जानते बाह्य में क्या है। कोई मर जाए तो पूछने वाला नहीं। वहां किसी को पता ही

नहीं चलता कि कोई मर गया। बाप मर गया तो भी बच्चों को नहीं पता चलता। बच्चे मर गये तो बाप को पता नहीं चलता। उस लंदन शहर में एक हाते में तीन बच्चे, चार बच्चे मां बाप मार डालते हैं। क्यों मारते हैं? क्योंकि तंग आ गये। आप सोचिये कि कम से कम दो बच्चे तो मार ही डालते हैं। आपने कहीं सुना है किसी मां को, बाप को, अपने देश में, चाहे दस बच्चे हो जाएं, वो पकड़ के मारता है? इतनी जालिम उनकी आदत है, और हम लोग इतने सहज सरल प्रेम के लोग हैं। हमको इस चक्कर में बस नहीं फंसना चाहिए।

बाकी आपको मैं जागृति आज दे दूंगी। आप लोग पार हो जाएं। एक बार आत्म-बोध होने के बाद आपके हाथ में से चैतन्य की लहरियां शुरू हो जाएंगी। आपके नस-नस में ये चीज बहना चाहिए। ये नहीं कि कोई बता दे आप पार हो गए। आपके सर में से कुण्डलिनी का जो ब्रह्मरंध्र है, छिद करके वहां से ठंडी हवा आयेगी। यहां से ठंडी हवा आ जाएगी। आप देखेंगे कि आपके सर में से ठंडी हवा निकल रही है। हाथ में से ठंडी हवा आएगी।

और आप गाते भी हैं कि ठंडी हवा आयी और चांदी के पत्ते हिलने लग गये और देवी आयी। आपने गाना भी गाया। हमसे योगी महाजन पूछ रहे थे कि मां इनको कैसे पता कि ठंडी हवा आती है जब देवी आती है? इनको कैसे पता चला? ये तो, मैंने कहा, कि आदि काल से चला आ रहा है। देवी तो यहां अनेक वर्षों से है। तो जिन लोगों ने गाया होगा, पहले बताया होगा कि जब देवी आती है तब उनसे ठंडी हवा आती है। तो आदि शंकराचार्य ने वर्णन किया है कि "सलिलम-सलिलम" हाथ से ऐसी ठंडी-ठंडी हवा आनी चाहिए। ये देवी की पहचान है। जिसके बदन में ठंडी-ठंडी हवा आए वही अवतार है। ये देवी की पहचान है। ये इन्होंने कहा था। लेकिन हमारे गांव में जो परम्परा से चले आ रहे हैं, उन्होंने देखा है कि जब देवी का अवतरण होता है तो सब जगह ठंडी हवा आती है। उनके बदन से ठंडी हवा आती है। इसलिए ये ऐसे-ऐसे गाने बने हुए हैं। ये पारम्परिक जो गाने बने हुए हैं, इसके अन्दर बड़ी खूबी से सारी बातें लिखी हुई हैं कि देवी क्या चीज है और देवी को कैसे पहचानना चाहिए।

तो इस तरह से आप लोगों के पास तो बड़ी सम्पदा है, बड़ी आपके पास में सूझ-बूझ है, समझ है, और आप सीधे-साधे सरल स्वभाव के लोग हैं। जो कठिन स्वभाव के लोग हैं वो बड़े मुश्किल होते हैं। आप लोगों को पार कराना कोई मुश्किल नहीं। लेकिन एक ही वचन देना है कि ये गुरू घंटालों को आप छोड़ देंगी और इसके आगे पीछे नहीं जाएंगी। उससे बड़े नुकसान आपने उठाये हैं, और उठायेंगी। इसलिए पहले सबसे पहले आप लोग सब जागृति हो जाएं।

दूसरा मैंने ये सुना कि यहां पर गाना गाते लोगों के बदन में शरीर हिलने लग जाता है। कहते हैं देवी आती है। ये गलत फहमी है बहुत बड़ी। देवी किसी के बदन में नहीं आ सकती। बहुत मुश्किल। देवी का काम करना आसान है? देवी के अन्दर तो हजारों चक्र होते हैं। उन चक्रों को संभालना, उनको ठीक से उसका चलाना, उसमें से ठंडी ठंडी लहरें बहाना, लोगों का भला करना और ऐसे इंसान का चरित्र भी तो उज्जवल होना चाहिए। हमारे बम्बई में जितनी नौकरानियां हैं, शराब पीती हैं, सब ढंग करती हैं, उनके बदन में आती हैं देवी। बताओ, ऐसे कोई देवी कोई पागल है किसी के अन्दर भी आने के लिए। देवी तो एक शुद्ध चित्त में ही आ सकती है। और फिर वो देवी आकर बताती भी क्या है कि तुम उसको मार डालो तो अच्छा होगा। घोड़े का नम्बर क्या है। फलाना क्या है, मटका खेलने का नम्बर क्या है। ऐसा कभी देवी बता सकती है? देवी तो हमेशा ऊंची बात करेगी, परमात्मा की बात करेगी, अच्छी बात

करेगी। ऐसी गंदी बातें तो नहीं करने वाली। ये जब आप देखते हैं तब भी आप ऐसी औरत के पैर पर आते हैं। ये तो भूत है। ये तो भूत हैं जो इन औरतों के अन्दर आ जाते हैं और वो बोलने लग जाती हैं और आप उनको मानने लग जाती हैं। ये जरूर है कि भूत को कुछ-कुछ बातें मालूम होती हैं, वो बता देता है। लेकिन उसमें क्या रखा है? इन सब चीजों में क्या रखा हुआ है? उसकी ओर जाने से और नुकसान ही होने वाला है। अगर आज आप भूत के यहां गये, तो कल वो आपके पकड़ जाएगा। आपका खानदान खा जाएगा। ऐसी औरतों को दरवाजे में आने नहीं देना चाहिए। उनके घर खाना नहीं खाना चाहिए। बिल्कुल दूर रखना चाहिए, क्योंकि वो बाधित लोग हैं, उनसे बीमारियां होती हैं गंदी। जिस औरत के बदन में भूत आता है उसको चाहिए कि वो अपना treatment (इलाज) करा ले और ठीक हो जाए। अन्त में पागल होकर ही मरती हैं। ऐसी सब औरतें पागल हो जाती हैं, पागल खाने में जाकर मरती हैं। आप लोग सब जानती हैं जो आपके यहां की बूढ़े हैं, उनसे पूछ लीजिए ऐसा होता है या नहीं। तो इस तरह की औरतों के पास या आदमियों के पास जाने की जरूरत नहीं, जिनके बदन में भूत आते हैं। इनको कहते हैं देव आ गये। और ऐसे आदमी भी लोग बहुत सारे होते हैं, जिनके अन्दर में भूत आ जाते हैं और खूब नाचने लग जाते हैं अजीब-अजीब बातें करते हैं और मुंह से kerosene oil (मिट्टी का तेल) रखके ऐसे आग जलाते हैं, और नीबू लगाते हैं, पता नहीं क्या-क्या तमाशे करते हैं। और लोग उस तमाशे पर ही ये हो जाते हैं।

तमाशा हो तो ठीक है, लेकिन ये तमाशा नहीं है। इसके पीछे में बड़ी जहरीली चीज है। ये सांप और नाग से भी बदतर लोग हैं। क्योंकि ये अगर आपको डस गये तो गये आप काम से। उससे आप बच नहीं सकते। इसलिये इन लोगों से आप दूर रहिये। इतना ही ज्ञान आपके लिए काफी है। बाकी आप बिल्कुल ठीक हैं। आपमें और कोई दोष नहीं। और किसी दोष को मैं नहीं देखती हूं। सिर्फ यही देखती हूं कि अज्ञान में, अंधकार में, आप गलत लोगों के पीछे में कभी-कभी चले जाते हैं। जो जितना नाटक करता है उतना उससे दूर रहिए।

परमात्मा कोई नाटक नहीं है। वो असलियत है। वास्तविकता है। कोई नाटक या झूठ से नहीं होता। अभी तक आपको अनुभव नहीं था, तो अनुभव हम आपको दे देते हैं। अनुभव शून्य होने की वजह से आप जानते नहीं कि कौन अच्छा है, बुरा है। अब आप अनुभव पाएंगे तो आप जानेंगे।

अब कोई अगर आपसे पूछे कि भई तुम नैना देवी को मानते हो तुम, चितपूर्णी को मानते हो, क्यों? वो तो एक पत्थर मात्र है। उसको क्यों मानते हो? क्या जवाब है आपके पास। कोई जवाब नहीं कि क्यों मानते हो? इनको शंकर जी को मानते हो? शंकर जी के बाहर ज्योतिर्लिंग है। क्यों? बारह ही क्यों हैं? क्या बात है? आपको पूछना चाहिए कि क्यों भई कैसे क्या? कैसे जाना? जो बड़े-बड़े फकीर हो गए, बड़े बड़े ऊंचे पहुँचे हुए, जो बड़े-बड़े मुनि ऋषिगण लोग अपने यहां हो गए, उनके अन्दर चैतन्य की लहरियां थीं। उन्होंने इस चैतन्य को महसूस किया और कहा कि ये तो पृथ्वी तत्व ने निकाली हुई चीज है। ये तो बाईबल में भी लिखा है, कि पृथ्वी तत्व में से निकलेगी चीज—"स्वयम्भू"। ये स्वयम्भू चीज निकली है। पर अब वो स्वयम्भू की कोई भी मूर्ति बनाए, फिर कोई भी गंदा आदमी और भी मूर्तियां बनाकर उसको बेचे, मंहगा करे, ये सब चीजें परमात्मा की नहीं होती। जो स्वयम्भू चीज है, जिसमें से चैतन्य बह रहा है, वो सिर्फ एक फकीर बता सकता है।

इसका एक उदाहरण बताएं। एक बार हम, एक जगह है, जिसको कि राहुरी कहते हैं, जहां पर कि हमारे बाप-दादे राज करते थे, वहां पर गए

थे। वहां किसी ने बताया कि मां यहां एक बड़ी अजीब सी जगह है। यहां पर एक अंग्रेज था पचास साल पहले। तो वो यहां पर एक dam (बांध) बना रहा था। जब बांध डाल रहा था तो उसने देखा कि एक जगह ऐसी है—करीबन सौ फुट की जगह ऐसी—कि वहां कुछ भी करिए, आप खोद ही नहीं सकते। और वहां आप कुछ बनाइये तो वो ढह जाता है। रात में ढह जाए और सवेरे जो है फिर वो लोग बनाए, फिर वो रात में ढह जाए। तो होता क्या है कुछ समझ में नहीं आ रहा ? बड़ी चमत्कार की चीज है। तो एक फकीर ने आकर कहा, 'इसे छोड़ दो, ये मां का स्थान है, इसको नहीं छूना तुम।" उसने कहा, इसको कैसे मालूम ? उसने कहा, "जो भी है, मैं कह रहा हूँ कि इससे अलग हट जाओ।" तो आप देखिए कि बांध ऐसा सीधा बनना चाहिए तो उस जगह बांध ऐसा बना हुआ है। तो मैं वहां गयी। मैंने कहा ये तो सारा सहस्रार है। उन्होंने कहा, कैसे ? मैंने कहा चलो, तुम लोग तो सब पार हो। देखो इसमें से ठंडक आ रही है। ऐसी ठंडी-ठंडी लहरें बदन पर आने लग गईं। अब जितने ज्योतिर्लिंग हैं, उसमें से ऐसी बात है। अब आप जाइये, जब आप कुण्डलिनी जागरण के बाद आप जाइये कहीं, वैष्णो देवी जाइये, और जाकर देखिए। "आप साक्षात् वैष्णों देवी है ?" पूछिए, उनके अन्दर से ठंडी-ठंडी हवा आनी शुरू हो जाएगी। तो असल है कि नकल है, ये पहचान आ जाती है।

कोई आदमी अगर आपके सामने ऐसा-वैसा आ जाए तो आप फौरन जान लीजिएगा। उससे गरम-गरम हवा आएगी। नहीं आएगी तो हाथ में कभी कभी फोड़े भी आ जाते हैं, कुछ ऐसे दुष्ट आदमियों से जो दुष्ट होते हैं, वो फौरन आपको पता चल जाएंगे। आपको किसी से पूछना नहीं होगा, आप फौरन कहेंगे कि इस आदमी से मेरा कोई मतलब नहीं, जाइये। साफ कह देंगे।

अब अन्दर बाहर जानने का एक ही तरीका है कि आपके अन्दर प्रकाश आ जाए, और प्रकाश इस कुण्डलिनी से आता है जो छः चक्रों को छेदती है, जिसको "षटचक्र-भेदन" कहते हैं। ये चक्र जब छिद जाते हैं तो एक तरफ तो हमारी तन्दुरुस्ती अच्छी हो जाती है, और दूसरे तरफ हमारा मन शान्त हो जाता है। और तीसरी तरफ हमें आत्मा की प्राप्ति हो जाती है। आत्मा जो है सच्चिदानन्द है। माने आप इस चेतन अवस्था में सत्य को जान सकते हैं। अभी तक तो आपको सत्य-असत्य का फर्क ही नहीं मालूम। अब मैं भी सत्य हूँ या असत्य हूँ आप क्या जानिएगा ? जब तक आपके अन्दर चैतन्य की लहरियाँ नहीं आएगी तब तक आप क्या जानिएगा कि मैं क्या हूँ ?

उसी प्रकार आप इसको चित्त कहिए कि आपका चित्त जो है वो प्रकाशित हो जाता है। जैसे यहाँ आप बैठे-बैठे आप किसी के बारे में सोचें और एक दम यहाँ पर समझ लो जलन आ गयी, माने क्या ? हमारे यहाँ लंदन में जब पहले एक साहब पार हुए तो वहां के लोग शक्की ज्यादा हैं, आप लोग जैसे भक्ति तो उनमें, शक्की हैं, ज्यादातर शक्की लोग होते हैं। उनको समझता तो कुछ भी नहीं, देवी वगैरह। उनसे तो गणपति का 'ग' से शुरू करना पड़ता है। तो उनके यहाँ चमक आ गयी। तो कहने लगे, "मां यहाँ क्यों चमक आ रही है ? मैंने अपने पिता के लिए पूछा था सवाल।" मैंने कहा ये आपके पिता के चक्र हैं और हो सकता है कि उनको बड़ा बुरा Bronchitis गले में शिकायत हो गयी, क्योंकि ये विशुद्धि चक्र है। तो कहा, "अच्छा मैं अभी फोन करता हूँ।" स्काटलैंड में फोन किया तो उनका अम्मा ने यही कहा कि तुम्हारे बाप को बहुत बुरा bronchitis हो गया है और बीमार पड़े हैं। उसने कहा कि अच्छा। तो अब कहने लगे, "मां इसका निदान क्या है ? और अब इसको कैसे ठीक किया जाए।" तो निदान तो हो गया, मैंने कहा। अब इसको ठीक करने का तरीका हम तुमको बताते हैं कि तुम इसको किस तरह से कवच दो। जैसे ही

उन्होंने कवच दिया आधे घंटे में उनकी अम्मा का फोन आया कि पता नहीं क्या हुआ तुम्हारे बाप तो बुखार उतर गया है और दौड़ रहे हैं। वो तो बाहर चले गए। इस प्रकार ये चीज घटित होती है।

तो जो चित्त है वो आलोकित हो जाता है। चित्त में प्रकाश आ जाता है। आप जिसके भी बारे में सोचेंगे, जो भी करना चाहेंगे उसके बारे में आप यहाँ बैठे-बैठे जानेंगे। अब देखिए आपने सुना होगा कि रेडियो होता है, टेलीविजन होता है, कहाँ पर प्रोग्राम होता है, यहां सुनाई देता है। उसी प्रकार परमात्मा की 'अनन्त' ऐसी किरणें हैं ऐसा उनका जाल फैला हुआ है, 'हजारों' उनके हाथ हैं. उसी से कार्य होता है। पर पहले उनके राज्य में तो उतरिए। उनके साम्राज्य में तो आइये। अगर आप उनके राज्य में नहीं बैठे हैं, आप तो दूसरों के राज्य में बैठे हैं तो वो ही आपकी परवाह करें। जब आप परमात्मा के राज्य में आएंगे तब आपका पूरा इन्तजाम है वहां। सारे उनके देवदूत, गण आदि सारे आपकी सेवा में खड़े हुए हैं। सबके सब वहां पर पूरी तरह से आपकी व्यवस्था करेंगे। और हर आपके प्रश्न जो हैं उसके वो इस तरह से आपको उसकी हल मिलेंगे कि आप हैरान हो जाइएगा कि ये कैसे हो गया। ये मां हमें कैसे प्राप्त हुआ।

अनेक ऐसे उदारहण हैं, अनेक ऐसे उदाहरण सहजयोग में देखे गये कि जिसका उत्तर कोई भी नहीं दे पाया। बहुत बार कहीं हम बैठे हुए हैं। आकाश से एकदम देखते हैं कि प्रकाश की ज्योत की ज्योत आ रही है। वो कैमरा में पकड़ आ जाता है। कहीं कुछ. कहीं कुछ। एक बार हम बैडफर्ड में थे। ये तो वहां के पेपरों ने भी छापा कि बैडफर्ड में हम गए थे। हम तो लेक्चर दे रहे थे, काफी लोग थे। उस वक्त कोई नौ बजे के करीब, या आठ बजे के करीब कोई लड़का ऊपर से नीचे गिर पड़ा। अस्सी फुट नीचे गिरा। उसके पास मोटर साईकल थी। पुलिया पर से जब गिरा तो लोगों ने, पुलिया पर के लोगों ने एम्बुलेन्स मंगवाई। जब तक एम्बुलेन्स आयी, लड़का चढ़ के ऊपर चला आया। लोगों ने पूछा भई तुम ऊपर कैसे चढ़ आए? तो उन्होंने कहा वो, पता नहीं मुझे, एक आयीं थी। उन्होंने मुझे ठीक कर दिया। तो उन्होंने सोचा ये पागल हो गया है कि क्या? तो उसको अस्पताल ले गये वहां पुलिस आयी। उसने पुलिस से बताया, मेरी बात मानिए, एक स्त्री थी, वो एक सफेद मोटर में आयी। (हमारी सफेद मोटर है)। और सफेद साड़ी पहनी हुई थी। और एक हिन्दुस्तानी स्त्री थी। उसने आकर के और मुझे हाथ फेरा। इससे मैं ठीक हो गया। तो उन्होंने कहा कि भई ऐसे तो कोई आया नहीं, हम तो पुलिया पर खड़े देख रहे थे, और ये तो ऊपर चढ़ा आया। कहा कि नहीं, हुआ तो सही। ये तो बात है क्योंकि इसके तो कोई चोट वोट है नहीं। दूसरे दिन उन्होंने हमारा फोटो देखा, तो बताया यही तो वो स्त्री थी जिसने हमें बचाया। तो पूछा कि तुमने किया क्या? कहने लगे बस जिस वक्त मैं गिरने लगा, तो मैंने यही कहा कि, "हे पावन मां, Divine Mother मुझे तुम बचाओ। बस इतना मैंने कहा। मैने उसको याद किया सिफ। और कुछ नहीं। और जैसे मैं गिरा उसके बाद पता नहीं कैसे, ये एकदम आ गयीं, इन्होंने ऐसे हाथ किया। मैंने गाड़ी को आते देखा और उससे उतरते देखा और झट से नीचे आयीं और आकर के मुझे ठीक भी कर दिया।" ये उन्होंने साफ कहा, तो वो लोग परेशान हो गए। उन्होंने चिट्ठियाँ लिखीं। उन्होंने कहा कि ये कैसे क्या हो गया? तो उन्होंने कहा कि ऐसे तो बहुत किस्से India (भारत) में हुए हैं लेकिन अब इंग्लैण्ड में भी हो रहे हैं। अच्छी बात है। इसमें कोई विशेष बात नहीं है। क्योंकि जब, जिसके हजारों हाथ हैं, जिसके हजारों शक्तियां है, उसके लिए क्या विशेष बात है।

अगर हम कुछ हैं भी तो उसमें कौन-सी विशेष बात है। अगर सूर्य है, तो है. उसमें कौन-सी उसकी बात है। क्योंकि उसके अन्दर ये शक्ति है ही। जो

है सो है। उसमें कौन सी विशेष बात है। लेकिन आपकी विशेष बात है कि आप इंसान से बढ़कर आज परमात्मा के दरवाजे आए हैं। और ये ही नहीं आज आप इंसान से भी ऊँचे उठ करके अति मानव होने वाले हैं। आप एक आत्म बोध पाने वाले इंसान होने वाले हैं। ये आपकी विशेषता है। ये आपका बड़प्पन है। इसीलिए मैंने सबसे पहले आप सबको प्रणाम किया था। इसीलिए मैंने कहा था कि आप सबको मेरा प्रणाम।

अब हम लोग थोड़ी देर में कुण्डलिनी जागरण का प्रयोग करेंगे।

-- त्यौहार --

नाम	अंग्रेजी दिनांक/हिन्दी सम्वत्	विवरण
नाग पंचमी	२० अगस्त १९८५ (श्रावण शुक्ल पंचमी)	कुंडलिनी पूजा
रक्षा बंधन	३० अगस्त १९८५ (श्रावण शुक्ल पूर्णिमा)	शुद्ध स्नेह और संरक्षण के प्रतीक-स्वरूप बहन भाई के सूत्र (राखी) बांधती है।
गौरी पूजा	२० सितम्बर १९८५ (भाद्र शुक्ल षष्टी)	
नवरात्रि	१४ से २१ अक्तूबर १९८५ (श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक)	नौ दिन तक आदि शक्ति की पूजा
दशहरा (विजया दशमी)	२२ अक्टूबर १९८५ (श्रावण शुक्ल दशमी)	आसुरी शक्ति पर दैवी शक्ति की विजय के प्रतीक-स्वरूप श्री राम द्वारा राक्षस पति रावण का हनन।
खोजागिरी पूजा (शरद् पूर्णिमा)	२७ अक्टूबर १९८५ (आश्विन शुक्ल पूर्णिमा)	श्री लक्ष्मी की पूजा। भक्तजन सम्पूर्ण रात्रि जागते हैं और देवी की स्तुति में भजन गाते हैं।

॥ जय श्री माता जी ॥

अमरहिंद मंडल
दादर, बम्बई
२२ सितम्बर १९७९

कुण्डलिनी और श्री गणेश पूजा

श्री गणेश की आराधना अनादि है, वे प्रत्येक योग के लिये प्रारम्भिक मुख्य साधना हैं। यही कारण है, श्री आदिशक्ति ने ब्रह्मांड की रचना से पहले सर्वप्रथम श्री गणेश को बनाया। इस विशेष तत्व की आराधना, श्री गणेशजी की पूजा जिस महाराष्ट्र भूमिमें विशेष रूप से होती है, वहाँ के साधक क्या कभी जानेंगे ? इसका उत्तर यदि 'हाँ' में है तो आप के लिए परमपूज्य श्री माताजी निर्मला देवीजी का निम्न भाषण पढ़कर सहजयोग आत्मसात करने के अलावा दूसरा कोई भी मार्ग नहीं है।

आज के इस नवरात्रि प्रथम दिन शुभ घड़ी में, ऐसे इस सुन्दर वातावरण में इतना सुन्दर विषय, सभी योगायोग मिले हुए दिखते हैं। आज तक मुझे किसी ने पूजा की बात नहीं कही थी परन्तु वह बहुत महत्वपूर्ण है। विशेषत: इस भारत भूमि में, महाराष्ट्र की पुण्य भूमि में, जहां अष्ट-विनाशकों की रचना सृष्टि देवी ने (प्रकृति ने) की है। वहां श्री गणेश का क्या महत्व है, ये बातें बहुत से लोगों को मालूम नहीं हैं। इसका मुझे बहुत आश्चर्य है। हो सकता है जिन्हें सब कुछ पता था या जिन्हें सब कुछ मालूम था ऐसे बड़े-बड़े साधु सन्त इस आपकी सन्त भूमि में हुए हैं, उन्हें किसी ने बोलने का मौका नहीं दिया या उनकी किसी ने सुनी नहीं। परन्तु इसके बारे में जितना कहा जाए उतना कम है और एक के जगह सात भाषण भी रखते तो भी श्री गणेश के बारे में बोलने के लिए मुझे वो कम होता।

आज का सुमुहूर्त घटपूजन का है। घटस्थापना अनादि है। मतलब जब इस सृष्टि की रचना हुई, (सृष्टि की रचना एक ही समय नहीं हुई वह अनेक बार हुई है।) तब पहले घटस्थापना करनी पड़ी। अब 'घट' का क्या मतलब है, यह अत्यन्त गहनता से समझ लेना जरूरी है। प्रथम ब्रह्मतत्व में जो स्थिति है, वहाँ परमेश्वर का वास्तव्य होता है। उसे हम अंग्रेजी में entrophy कहेंगे। इस स्थिति में कहीं कुछ हलचल नहीं होती है। परन्तु स्थिति में जब इच्छा का उद्गम होता है या इच्छा की लहर 'परमेश्वर' को आती है, तब उसी में परमेश्वर की इच्छा समा जाती है। वह इच्छा ऐसी है कि अब इस संसार में कुछ सृजन करना चाहिए। यह इच्छा उन्हें क्यों होती है ? वह उनकी इच्छा ! परमेश्वर को इच्छा क्यों होती है, ये समझना मनुष्य की बुद्धि से परे है। ऐसी बहुत सी बातें मनुष्य की सर्वसाधारण बुद्धिमत्ता से परे हैं। परन्तु जैसे हम कोई बात मान लेते हैं, वैसे ही ये भी मानना पड़ेगा कि परमेश्वर की इच्छा उनका शौक है। उनकी इच्छा, उन्हें जो कुछ करना है वे करते रहते हैं। यह इच्छा उन्हीं में विलीन होती है (एकरूप होती है) और वह फिर से जागृत होती है। जैसे कोई मनुष्य सो जाता है और फिर जग जाता है। सो जाने के बाद भी उसकी इच्छाएं उसी के साथ सोती हैं, परन्तु वे वहीं होती हैं और जगने के बाद कार्यान्वित होता हैं। वैसे ही परमेश्वर का है। जब

उन्हें इच्छा हुई कि अब एक सृष्टि की रचना करें, तब इस सारी सृष्टि की रचना की इच्छा को, जिसे हम तरंग कहेंगे या जो लहरें हैं, वह एकत्रित करके एक घट में भर दिया। यही वह 'घट' है।

मतलब परमेश्वर व उनकी इच्छाशक्ति अगर अलग की जाय, हम अगर ऐसा समझ सकें तो समझ में आएगा। आपका भी उसी तरह है, परन्तु थोड़ा सा फर्क है। आप और आप की इच्छा शक्ति इसमें फर्क है। वह पहले जन्म लेती है। जब तक आपको किसी बात की इच्छा नहीं होती तब तक कोई काम नहीं होता। मतलब अब जो ये सुन्दर विश्व बना है वह किसी की इच्छा के कारण है। हर एक बात इच्छा होने पर ही कार्यान्वित होती है। और परमेश्वर को इच्छा कार्यान्वित होने के लिए उसे उनसे अलग करना पड़ता है। अगर वह परमेश्वर में समायी रहेगी तो निद्रावस्था में रहेगी। इसलिए वह उनसे अलग होकर कार्यान्वित होती है। उसे हम 'आदिशक्ति' कहेंगे। ये प्रथम स्थिति जब आयी तब घटस्थापना हुई। यह अनादि काल से अनेक बार हुआ है। और आज भी जब हम घटस्थापना करते हैं। तो उस अनादि अनंत क्रिया को याद करते हैं। तो उस नवरात्रि के प्रथम दिन हम घटस्थापना करते हैं। मतलब कितनी बड़ी ये चीज है! याद रखिए। उस समय परमेश्वर ने जो इच्छा की वह कार्यान्वित करने से पहले एकत्रित की और एक घट में भर दी। उसी 'इच्छा' का हम आज पूजन कर रहे हैं। उसी का आज हमने पूजन किया। वह इच्छा परमेश्वर को हुई, उन्होंने आज हमें मनुष्यत्व तक लाया, इतनी बड़ी स्थिति तक पहुँचाया, तब आपका ये परम कर्त्तव्य है कि उनकी इस इच्छा की पहले वंदन करें।

उस इच्छा को हमारे सहजयोग की भाषा में श्री 'महाकाली की इच्छा' कहते हैं या 'महाकाली की शक्ति' कहते हैं। ये महाकाली की शक्ति है और ये जो नवरात्रि के नव दिन (विशेषकर महाराष्ट्र में) समारंभ होते हैं वे इस महाकाली के जो कुछ अनेक अवतरण हुए हैं उनके बारे में है। अब महाकाली शक्ति से पहले यानी इच्छा शक्ति के पहले कुछ भी नहीं हो सकता। इसीलिए इच्छा शक्ति आदि है, और अंत भी उसी में होता है। प्रथम इच्छा से ही सब कुछ बनता है और उसी में विलीन होता है। तो ये सदाशिव की शक्ति या आदिशक्ति है। ये आप में महाकाली की शक्ति बनकर बहती है। अगर अपना शरीर विराट का अंशस्वरूप माना तो उसमें जो बायीं तरफ की शक्ति है वह आप की इड़ा नाड़ी से प्रवाहित होती है। उस शक्ति को महाकाली की शक्ति कहते हैं। इसका मनुष्य में सबसे ज्यादा प्रादुर्भाव हुआ है। पशुओं में उतना नहीं है। अपने में वह (मनुष्य प्राणी में) अपनी दायीं तरफ से सिर में से निकलती है। उसके बाद बायीं तरफ जाकर त्रिकोणाकार अस्थि के नीचे जो श्री गणेश का स्थान है वहां खत्म होती है। मतलब महाकाली की शक्ति ने सर्वप्रथम केवल श्री गणेश को जन्म दिया। तब श्री गणेश स्थापित हुए। श्री गणेश सर्वप्रथम स्थापित किए हुए देवता हैं। और इसी तरह, जिस प्रकार श्री महाकाली का है, उसी प्रकार श्री गणेश का है। ये बीज है और बीज से सारा विश्व निकल कर उसी में वापस समा जाता है। श्री गणेश, ये जो कुछ है, उसी का बीज है, जो आपको आंख से दिख रहा है, कृति में है, इच्छा में है, उसका बीज है। इसीलिए श्री गणेश को प्रमुख देवता माना जाता है। इतना ही नहीं, श्री गणेश का पूजन किए बगैर आप कोई भी कार्य नहीं कर सकते। फिर वे कोई भी हो, शिव हो, वैष्णव हो या ब्रह्मदेव को मानने वाले हो, सभी प्रथम श्री गणेश का पूजन करते हैं। उसका कारण है कि श्री गणेश तत्व परमेश्वर ने सबसे पहले इस सृष्टि में स्थापित किया। श्री गणेश तत्व मतलब जिसे हम अबोधिता कहते हैं या अंग्रेजी में innocence कहते हैं। अब ये तत्व बहुत ही सूक्ष्म है, ये हमारी समझ में नहीं आता। जो बच्चों में

रहता है, जिसकी चारों तरफ कमी है और जिसका सुगंध फैला हुआ है। इसीलिए छोटे बच्चे इतने प्यारे लगते हैं। ऐसा यह अबोधिता का तत्व है। वह इस श्री गणेश में समाया है। अब ये मनुष्य को समझना जरा मुश्किल है कि एक ही देवता में ये सब कुछ समाया है? परन्तु अगर हमने सूरज को देखा तो जैसी उनमें प्रकाश देने की शक्ति है उसी प्रकार श्री गणेश में ये अबोधिता है। तो ये जो अबोधिता की शक्ति परमेश्वर ने हममें भरी है उसकी हमें पूजा करनी है। मतलब हम भी इसी प्रकार अबोध हो जाएं। अबोधिता का अर्थ बहुतों को लगता है 'अज्ञानी'। परन्तु अबोधिता, मतलब भोलापन, जो किसी बच्चे में है या मासूमियत कहिए, वह हमारे में आनी चाहिए। ये कितना बड़ा तत्व है ये आप नहीं समझते हैं। एक छोटा बच्चा अगर खेलने लगे। वैसे आजकल के बच्चों में भोलापन नहीं रहा है। उसका कारण आप बड़े लोग ही हैं। हम दूसरों को क्या बताएं, हम कौन से अपने धर्म का पालन कर रहे हैं? कितने धार्मिक हम हैं? जो अपने बच्चों को धार्मिक बनाएं? ये सब उसी पर निर्भर है। इसीलिए बच्चे ऐसे हैं। अब ये जो मनुष्य में 'अबोधिता' का लक्षण है वह किसी बच्चे को देखकर पहचाना जा सकता है। जिस मनुष्य में अबोधिता होती है वह कितना भी बड़ा हो वह उसमें रहती है। जैसे कोई छोटा बच्चा खेलेगा, खेल में वह शिवाजी राजा बनेगा, किला बनवाएगा, सब कुछ करेगा, उसके बाद सब कुछ छोड़कर वह चला जाएगा। मतलब सब कुछ करके उससे अलिप्त (अलग) रहना। जो कुछ किया, उसके प्रति अलगाव। उसके पीछे दौड़ना नहीं।

ये साधारणतया एक बच्चे का बर्ताव होता है। आपने किसी भी बच्चे को कुछ भी दिया तो वह उसको संभालकर रखेगा। फिर थोड़ी देर बाद आपने उसे कुछ फुसलाकर वह वापस ले लिया तो उसे उसका कोई दुःख नहीं रहेगा। परन्तु कुछ बातें ऐसी हैं जो छोटा बच्चा कभी नहीं छोड़ता। उसमें एक बात बहुत महत्वपूर्ण है। वह है उसकी 'मां'। उसकी मां वह नहीं छोड़ता। बाकी सब कुछ आपने उससे निकाल लिया तो कोई बात नहीं। उसे कुछ नहीं मालूम, पैसा नहीं मालूम है, पढ़ाई नहीं मालूम, कुछ नहीं मालूम। उसे केवल एक ही बात मालूम है। वह है उसकी मां। यह मेरी मां है, ये मेरी जन्मदात्री है, यही मेरी सब कुछ है। वह मां से ज्यादा किसी भी चीज को महत्व नहीं देता। मतलब हम सभी में बचपन से ये बीजतत्व है। इसीलिए हम अपनी मां को नहीं छोड़ते। हमें पता रहता है उसने हमें जन्म दिया है। परन्तु उसके सिवाय एक दूसरी मां परमेश्वर ने आपमें आपको दी है और वही मां अपने आप में आपकी 'कुण्डलिनी' है। कुण्डलिनी माता, जो आपमें त्रिकोणाकार अस्थि में परमेश्वर ने बिठायी है वह आपकी मां है। उसे आप हमेशा खोजते हैं। आपकी सभी खोजों में, फिर वो राज-काज में हो, सामाजिक हो या शिक्षा-क्षेत्र में हो, किसी भी चीज का आपको शौक हो, उन सभी शौकों के पीछे आप उस कुण्डलिनी मां को खोजते है। यह कुण्डलिनी मां आपको परम पद को पहुँचाती है, जहां सभी तरह का समाधान मिलता हैं। इस मां की खोज, माने इस मां के प्रति खिचाव, जो आपमें अदृश्यता में होती है, वह आपमें श्री गणेश तत्व के कारण जागृत रहती है।

जिस मनुष्य का श्री गणेश तत्व एकदम नष्ट हुआ होता है उसमें अबोधिता नहीं होती है। अबोधिता में बहुत से गुण मनुष्य में उस्फुर्त से होते हैं। मतलब मां-बहन, भाई उनके प्रति पवित्रता रखना। जीवन में बर्ताव करते समय, संसार में रहते समय परमेश्वर ने एक अपनी 'पत्नी' और बाकी सब लोग जो हैं उनसे आपका पवित्र रिश्ता है, ऐसा परमेश्वर ने बताया है, और ऐसा अगर आपके व्यवहार में दिखने लगा तो मानना पड़ेगा कि इस मनुष्य में सच्ची अबोधिता है। वह उनकी सच्ची पहचान है। अबोधिता की ये पहचान है कि मनुष्य

को सभी में पवित्रता दिखाई देती है क्योंकि अपने आप पवित्र होने के कारण वह अपवित्र नजरों से किसी को नहीं देखता। अब अपने यहां पवित्रता समझाने की बात नहीं है। अपने यहां पवित्रता क्या है ये मनुष्य को मालूम है। इंग्लैंड में, अमेरिका में समझाना पड़ता है क्योंकि उनके दिमाग ठिकाने नहीं होते। परन्तु आप अभी भी सही हो। विशेषतः इस भारत भूमि से परमेश्वर कृपा से, अष्टविनायक कृपा से या आपकी पूर्वपुण्याई से, आपके गुरु-सन्तों की की हुई सेवा के कारण पृथ्वी पर महाराष्ट्र एक ऐसी भूमि है कि जहां से ये पवित्रता अभी तक नहीं हिली है। और इसी पवित्रता का आज आप पूजन कर रहे हैं। मतलब पूजन करते समय आपमें वह पवित्रता है कि नहीं है इधर ध्यान देना जरूरी है। अब हमारे सहजयोग में जिनमें गणेश तत्व नहीं है वह व्यक्ति किसी काम का नहीं, क्योंकि ये जो गणेश बिठाये हैं वे गौरी के पुत्र हैं और श्री गौरी आप की कुण्डलिनी शक्ति है। यही ये गौरी शक्ति है। आज श्री गौरी पूजन है और आज श्री गणेश पूजन है। मतलब कितना बड़ा दिन है। ये आप समझ लीजिए। आप में जो आपका श्री गणेशतत्व श्री गौरी से उत्पन्न है, ये मनुष्य ठीक है कि नहीं, मतलब उसमें कितनी सुन्दर व्यवस्था की है ये आप देखिए।

इड़ा और पिंगला ये दो नाड़ियां आप में हैं। इसमें एक महाकाली और एक महासरस्वती है। महाकाली से महासरस्वती निकली है। महासरस्वती क्रियाशक्ति है। पहली इच्छाशक्ति है और दूसरी क्रियाशक्ति है। इन दोनों शक्तियों से आपने जो कुछ इस जन्म में किया है, पूर्वजन्मों में किया है, जो कुछ सुकृत है और दुष्कृत है उन सबका ब्यौरा ये श्री गणेश वहां बैठकर देखते हैं। वे देखते हैं इस मनुष्य ने कितना पुण्य किया है। अब पुण्य क्या है, ये तो आजकल के मॉडर्न लोगों को मालूम नहीं और उस बारे में उन्हें कोई मतलब नहीं। लोगों को लगता है इसमें क्या रखा है? पुण्य क्या है, कितना है? अगर पाप-पुण्य की भावना ही नहीं है तो पाप और उसका क्षालन ये बातें समझाने का कोई मतलब ही नहीं है। मनुष्य में पाप और पुण्य भाव हैं, जानवरों में नहीं हैं। जानवरों में बहुत से भाव नहीं हैं। अब देखिए किसी जानवर को आप गोबर में से ले जाओ या गन्दगी में से ले जाओ उसे बदबू नहीं आती। उसे सौंदर्य क्या है ये भी नहीं मालूम। आप मनुष्य बनते ही आपको पाप-पुण्य का विचार आता है। आप जानते हैं ये पाप है, ये गलत है, इसे नहीं करना है। ये पुण्य है इसे करना चाहिए। पाप-पुण्य का न्याय आप नहीं करते, यहां में बैठे श्री गणेश इसका हिसाब करते हैं। प्रत्येक मनुष्य में श्री गणेश का स्थान है वह प्रोस्टेट ग्लेंड (Prostate gland) के पास होकर, उसे हम मूलाधार चक्र कहते हैं। त्रिकोणाकार अस्थि को मूलाधार कहा है। वहां कुण्डलिनी मां बैठी है। उस त्रिकोणाकार अस्थि के नीचे श्री गणेश उनकी लज्जा की रक्षा करते हैं। अब आपको मालूम होगा श्री गणेश की स्थापना श्री गौरी ने कैसे की थी। उनकी शादी हुई थी पर अभी पति से भेंट नहीं हुई थी। उस समय वह नहाने गयीं और अपना (बदन का) मैल जो था उससे श्री गणेश बनाये। अब देखिए हाथ में अगर चैतन्य लहरें (vibrations) है तो सारे शरीर को भी चैतन्य लहरें होंगी तो वह चैतन्य गौरी माता ने मैल में ले लिया तो वह मैल भी चैतन्यमय होगा और उसी मैल का उन्होंने श्री गणेश बनाया। उसे अपने स्नानघर के बाहर रखा। अब देखिए सामने नहीं रखा, क्योंकि स्नानघर से सारी गन्दगी बहकर बाहर आती है। अपने यहां बहुत से लोगों को मालूम है। ये जो स्नानघर का बहता पानी है उसमें लोग अरवी के पत्ते व कभी-कभी कमल के फूल उगाते हैं और वहां पर ही वे अच्छे उगते हैं। ठीक इसी तरह श्री गणेश का है मतलब सबने गन्दगी का जो हिस्सा है उस हिस्से के ऊपर ये कमल है और वह अपने सुगंध से उस सारी गन्दगी को सुगंधित करता है। ये जो उनकी शक्ति है वह आपके जीवन में भी आपकी बहुत मदद करती है। अपने में जो कुछ गन्दगी दिखाई

देती है वह इस श्रीगणेश तत्व के कारण दूर होती है। अब इस श्री गणेश तत्व से कुण्डलिनी का, माने श्री गौरी का, पहले पूजन करना पड़ता है। मतलब अपने में अबोधिता होनी चाहिए। आपको आश्चर्य होगा, जब अपनी कुण्डलिनी का जागरण होता है तब श्री गणेश तत्व की सुगंध सारे शरीर में फैलती है।

बहुतों को, विशेषतः सहजयोगियों की, जिस समय कुण्डलिनी का जागरण होता है उस समय खुशबू आती है। क्योंकि श्री गणेश तत्व पृथ्वी तत्व से बना है। इस श्री महागणेश ने पृथ्वी बनायी है। तो अपने में जो श्री गणेश हैं, वे भी पृथ्वी तत्व से बने हैं। अब आपको मालूम है कि सारे सुगंध पृथ्वी में से आते हैं। सारे फूलों के सुगंध पृथ्वी में से आते हैं। इसलिए कुण्डलिनी का जागरण होते समय बहुतों को अनेक प्रकार के सुगंध आते हैं। इतना ही नहीं बहुत से सहजयोगी तो मुझे कहते हैं, श्री माताजी आपकी याद आते ही अत्यंत खुशबू आती है। बहुतों को भ्रम होता है कि श्री माताजी कुछ इत्र वगैरा लगाती हैं। पर ऐसा नहीं है। अगर आप में श्री गणेश तत्व जागृत हो तो अंदर से खुशबू आती है। तरह-तरह के सुगंध मनुष्य के अंदर से आते हैं। परन्तु कुछ दुनिया में ऐसे भी लोग हैं जो अपने आपको साधु-सन्त कहलवाते हैं और उन्हें सुगंध अच्छा नहीं लगता। अपने आपको परमेश्वर कहलाते हैं और उन्हें सुगंध अच्छा नहीं लगता। अपने आपको परमेश्वर कहलाते हैं और उन्हें सुगंध से नफरत है। अपने यहाँ किसी भी देवता का वर्णन आपने पढ़ा होगा, विशेषतः श्री गणेश तो सुगंध-प्रिय हैं, वे कुसुमप्रिय भी हैं, और कमलप्रिय हैं। वैसे ही श्री विष्णु के वर्णनों में लिखा है, श्री देवी के वर्णनों में लिखा है। इसका मतलब है कि जिन लोगों को सुगंध प्रिय नहीं व जिनको सुगंध अच्छा नहीं लगता उनमें कुछ भयंकर दोष हैं। वे परमेश्वर के विरोध में है, उनमें परमेश्वर शक्ति नहीं है। जिस मनुष्य को सुगंध बिल्कुल अच्छा नहीं लगता उसमें कुछ भयंकर दोष हैं और परमेश्वर के विरोधी तत्व बैठे हुए हैं, यह निश्चित है। क्योंकि सुगंध पृथ्वी तत्व का एक महान् तत्व है। योगभाषा में उसके अनेक नाम हैं। परन्तु कहना ये है कि जो कुछ पंचमहातत्व हैं और उनके पहले उनके जो प्राणतत्व है, उस प्राणतत्व में आद्य या सर्वप्रथम सुगंध है। उसी तत्व से हमारी पृथ्वी भी बनी है। उसी प्राणतत्व से बना हुआ श्री गणेश है। तो श्री गणेश का पूजन करते समय प्रथम हमें अपने आप को सुगंधित करना चाहिए। मतलब यह कि अपना जीवन अति सूक्ष्मता में सुगंधित होना चाहिए। बाह्यतः मनुष्य जितना दुष्ट होगा, बुरा होगा उतना ही वह दुर्गंधी होता है। हमारे सहजयोग के हिसाब से ऐसा मनुष्य दुर्गंधी है। ऊपर से उसने खुशबू लगायी होगी तो भी वह मनुष्य सुगंधित नहीं है। सुगंध ऐसा होना चाहिए कि मनुष्य आकर्षक लगे। किसी मनुष्य के पास जाकर खड़े होने पर अगर उस मनुष्य के प्रति सुप्रसन्नता और पवित्रता लगे तो वह मनुष्य सच में सुगंधित है। दूसरा मनुष्य जिसमें से लालसा और गन्दगी बाहर बह रही है उस मनुष्य के पास जाकर खड़े होने से गन्दा लगेगा। परन्तु ऐसे मनुष्य को देखकर कुछ लोगों को अच्छा भी लगता होगा। यह उनमें दोष पर निर्भर है। वे लोग श्री गणेश तत्व के नहीं हैं।

श्री गणेश तत्व वाला मनुष्य अत्यंत सात्विक होता है। उस मनुष्य में एक तरह का विशेष आकर्षण होता है। उस आकर्षकता में इतनी पवित्रता होती है कि वह आकर्षकता ही मनुष्य को सुखी रखती है। अब आकर्षकता की कल्पनाएं भी विक्षिप्त हो गयी हैं। इसका कारण है कि मनुष्य में श्री गणेश तत्व रहा नहीं है। अगर मनुष्य में श्री गणेश तत्व होगा तो आकर्षकता भी श्री गणेश तत्व पर निर्भर है। सहज ही है। जहां आकर्षकता

(श्री गणेश तत्व) है वहां वह तत्व अपने में होगा। तभी अपने को आकर्षकता महसूस होगी। परन्तु आजकल के आधुनिक युग में अगर आपने पवित्रता की बातें कीं तो आप में जो बड़े-बड़े बुद्धिजीवी लोग हैं, उन्हें यह बिल्कुल मान्य नहीं होगा। उन्हें लगता है ये सब पुरानी कल्पनाएं हैं। और इसी पुरानी कल्पनाओं से कहते हैं 'यह मत करो, वह मत करो, ऐसा मत करो वैसा मत करो, ऐसा नहीं करना चाहिए, वैसा नहीं करना चाहिए। इस तरह से आप लोगों की conditioning करते हैं।' ऐसी बातों से फिर मनुष्य बुरे मार्ग की तरफ बढ़ता है। कहने का मतलब है कि मनुष्य में पवित्रता मां-बाप की संगति से आती है। प्रथमतः अगर मां पवित्र नहीं होगी तो बेटे का पवित्र रहना बहुत मुश्किल है। परन्तु कोई ऐसा एक जीव होता है जो अत्यंत बुरी औरत के यहां जन्म लेता है और वह इसीलिए पैदा होता है कि उस औरत का उद्धार हो जाए। और वह खुद बहुत बड़ा जीव होता है। विशेष पुण्यवान आत्मा होती है। मतलब जैसे गन्दगी में कमल का फूलना वैसे ही वह मनुष्य जन्म लेता है। ऐसा है, पर ये अपवादात्मक है? निसर्गतः अगर मां पवित्र होगी तो लड़का या लड़की पवित्र होती है, या सहजता में उन्हें पवित्रता प्राप्त हो ती है।

पवित्रता में सर्वप्रथम बात है, उसे अपने पति के लिए निष्ठा होनी जरूरी है। अगर श्री पार्वती में श्री शंकर के लिए निष्ठा नहीं तो उसमें क्या कोई अर्थ है? श्री पार्वती का श्री शंकर के बिना कोई अर्थ नहीं। वह श्री शंकर से ज्यादा शक्तिशाली हैं। परन्तु वह शक्ति श्री शंकर की है। श्री सदाशिव की वह शक्ति प्रथम शंकर की शरण गयी है। परन्तु वह उनकी शक्ति है। परमेश्वर की व अन्य देवताओं की बातें अलग होती हैं और मनुष्य की अलग। मनुष्य की समझ में ये नहीं आएगा। उन्हें समझ में नहीं आएगा पति और पत्नी में इतनी एकता कि उनमें दो हिस्से नहीं हैं। नहीं जैसे चंद्र और चंद्रिका या सूर्य और सूर्य की किरणें, वैसी उनमें एकता मनुष्य के समझ में नहीं आएगा? मनुष्य को लगता है पति और पत्नी में लड़ाइयां होनी ही चाहिए। अगर लड़ाइयां नहीं हुई तो ये कोई अजीब बात है। एक तरह का एक अत्यंत पवित्र बंधन पति व पत्नी में या कहना चाहिए श्री सदाशिव व श्री पार्वती में है और अपना पुत्र श्री गणेश श्री पार्वती ने केवल अपनी पवित्रता और संकल्प से पैदा किया है। कितनी महानता है उनकी पवित्रता में! उन्होंने यह संकल्प से सिद्ध किया हुआ है। सहजयोग में हमने हमारा जो कुछ भी पुण्य है वह लगाया है। उससे जितने लोगों को आत्म साक्षात्कार देना संभव है उतनों को देना यही एक हमारे जीवन का अर्थ है। फिर भी कोई हमें "श्री माताजी देवी हैं" कहता है तो वह पसन्द नहीं। ऐसा कुछ नहीं कहना। क्यों कहना है? लोगों को यह पसन्द नहीं है। क्या जरूरत है यह कहने की? उन्हें गुस्सा आएगा। अपने से कोई ऊंचा है, ऐसा कहते ही मनुष्य को गुस्सा आता है। परन्तु धूर्त लोगों ने अपने-आप को देवता या भगवान कहलवाया तो लोग उनके सामने माथा टेकते हैं। उन्हें वे एकदम भगवान मानने लगते हैं, क्योंकि वे बेवकूफ बनाने की प्रेतविद्या, भूतविद्या व श्मशानविद्या, संमोहनविद्या काम में लाते हैं। उससे मनुष्य का दिमाग काम नहीं करता। उन्हें बिल्कुल नंगा बनाकर नचाया या पैसे लूट कर दिवालिया बनाया तो भी चलेगा, पर वे उन्हें भगवान कहेंगे। परन्तु जो सच्चा है उसे पाना होता है। और अगर वो आप पा लेंगे तो आप समझेंगे उसमें कितना अर्थ है और क्यों ऐसा कहना पड़ता है? वह मैं आज आपको बताने जा रही हूं। मतलब श्री गणेश को अगर आपने भगवान नहीं माना तो नहीं चलेगा। परन्तु वह प्रत्यक्ष में नहीं दिखाई देता। इसलिए लोगों को समझ में नहीं आता। एक डॉक्टर भी घर में श्री गणेश की फोटो रखेगा, उसे कुंकुम लगाएगा, टीका लगाएगा। परन्तु उसे अगर आपने बताया कि श्री गणेशतत्व आपके शरीर

में स्थित है और उससे आपको कितने शारीरिक फायदे होंगे तो वह ये कभी भी मानने को तैयार नहीं। परन्तु उन्हें मैंने कहा, आप श्री गणेश की ये फोटो उतारकर रख दीजिए, तो ये भी वे मानेंगे नहीं। लेकिन मैंने ये कहा श्री गणेश तत्व के बिना आप हिल भी नहीं सकते तो वे ये बात मानने को तैयार नहीं हैं। अब देवत्व आप नहीं मानते परन्तु सहजयोग में श्री गणेश को मानना ही पड़ेगा। उसका कारण है कि आपको कोई बीमारी या परेशानी इस गणेश तत्व के कारण हुई होगी तो आपको श्री गणेश को ही भजना पड़ेगा। मतलब कि आपमें स्थित श्री गणेश नाराज होते हैं तो आपका श्री गणेश तत्व खराब होता है और आपको प्रोस्टेट ग्लेंड की तकलीफ व युटरस् का कैंसर वगैरा होता है। श्री गणेश तत्व को अगर आपने ठीक से नहीं रखा, मतलब अपने पुत्र से अगर ठीक से व्यवहार नहीं किया, माने आपमें मातृत्वता की भावना नहीं हो तो इन सब बातों के कारण युटरस का कैन्सर होता है। श्री गणेश तत्व के कुछ बहुत पवित्र नियम हैं। उनका अगर आपने ठीक से पालन नहीं किया तो आपको ऐसी तकलीफें होती हैं। परन्तु इन तकलीफों का संबंध डॉक्टर श्री गणेश तत्व के साथ नहीं जान सकते। पर उनका संबंध श्री गणेश के ही साथ है। वे यहां तक ही जानते हैं कि प्रोस्टेट ग्लेंड खराब है या ज्यादा से ज्यादा पेलव्हिक प्लेक्सस (pelvic plexus) खराब हो गया है। परन्तु इसके पीछे जो परमात्मा का हाथ है, मतलब अंतर ज्ञान का या यों कहिए परोक्षज्ञान से जो जाना जाता है, जो ऊपरी ज्ञान से परे है, जो आपको दिखाई नहीं देता, उसके लिए आपके पास अभी आँखें नहीं हैं, संवेदना नहीं है, अभी तक आपकी परिपूर्ति नहीं हुई है, तो आप कैसे समझोगे कि ये तकलीफें श्री गणेश तत्व खराब होने से हो गई हैं। श्री गणेश हम से नाराज हैं तो उन्हें प्रसन्न किये बिना हम सहजयोग नहीं पा सकते। ऐसा कहते ही वे डॉक्टर एक दम बिगड़ गये। 'हम श्री गणेश को मानने को तैयार नहीं, हम केवल विज्ञान को ही मानते हैं।' फिर देख लीजिए आपका कैन्सर श्री गणेश तत्व को माने बगैर ठीक नहीं होने वाला। श्री गणेश तत्व खराब होने से कैन्सर होता है। श्री गणेश तत्व हर जगह प्रत्येक अणु-रेणु (कण-कण) में सब तरफ संतुलन देखते हैं। हम कैन्सर ठीक करते है, किया है, और करेंगे। पर ये हमारा व्यवसाय नहीं है। तो ये श्री गणेश तत्व कितना महत्वपूर्ण है, उसे जितनी महत्ता दें उतनी कम है।

ये अत्यन्त सुन्दर चार पंखुडियों से बना श्री गणेश तत्व हम में है। इस चार पंखुडियों के बने हुए गणेश तत्व में बीचोंबीच बैठे गणेश हमारे शरीर में हैं। मतलब अपने शरीर में उनके एक-एक अंग है। उनके चार अंग होते हैं। उसमें से पहला अंग मानसिक अंग। मानसिक अंग का जो बीज है वह श्री गणेश तत्व का है। इच्छाशक्ति, माने जो बायें तरफ की शक्ति है, जो अपने में सारी भावनाएं पैदा करती है, उन भावनाओं के जड़ में श्री गणेश बैठे हैं। मतलब मनुष्य पागल है, उसका श्री गणेश तत्व खराब है। इसका मतलब ये नहीं कि वह मनुष्य अपवित्र है। परन्तु उसकी पवित्रता को किसी ठेस पहुँचाने पर उसे ऐसा होता है। किसी मनुष्य को अगर दूसरे लोगों ने बहुत सताया तो भी उसका श्री गणेश तत्व खराब हो सकता है। क्योंकि उसे लगता है अगर श्री गणेश है तो इस मनुष्य को वे मार क्यों नहीं देते? इस तरह के सवाल उसके मन में आने पर धीरे-धीरे उसकी बायीं बाजू खराब होने लगती। बायीं बाजू खराब होने से वह पागल बनने लगता है। अब देखिए गणेश तत्व का कितना संतुलन है। अगर आपने बहुत परिश्रम किया और तकलीफें उठायीं, बुद्धि से बहुत मेहनत करी और आगे का माने भविष्य का बहुत विचार किया (आजकल के लोगों में एक बीमारी लगी हुई है सोचने की) माने बहुत ज्यादा विचार किया और उसमें कहीं संतुलन नहीं रहा तो आपकी बायीं बाजू एकदम खराब हो जाती है। दायीं बाजू जो

है वह सूख जाती है। उससे बायीं तरफ की जो बीमारियां हैं वह सब गणेश तत्व खराब होने के कारण होती हैं। उसमें डायबिटीस ये बीमारी श्री गणेश तत्व खराब होने के कारण होती है। श्री गणेश की जो संतुलन व्यवस्था है, वे यह बीमारी ठीक करने के लिए लगाते हैं। ऐसा मनुष्य काम कम करता है। उसी प्रकार हृदयविकार (दिल की बीमारी) भी है। आपने बुद्धि से बहुत ज्यादा काम किया तो हृदयविकार होता है। क्योंकि श्री गणेश जी का स्वस्तिक अपने शरीर में बना है वह दो बाती की तरह दिखने वाली शक्तियाँ एकाकार होती हैं। एक बायीं तरफ की शक्ति महाकाली की इस तरह आती है व दूसरी दायीं तरफ की शक्ति महासरस्वती की। बीचोंबीच उनका मिलन बिंदु महालक्ष्मी शक्ति के बीच की खड़ी रेखा में है। बायें तरफ की सिंपथेटिक नर्व्हस सिस्टम जो है वह महाकाली की शक्ति से चलती है। माने इच्छाशक्ति से चालित है। अब किसी मनुष्य की इच्छा के विरोध में बहुत कार्य हुआ और उसकी एक भी इच्छा पूरी नहीं हुई तो वह पागल हो जाता है। नहीं तो उसे हार्टअटेक (दिल का दौरा) आता है। मतलब ऊपर कही गयी सारी बीमारियां अति सोचने से होती हैं। और उसका संतुलन श्री गणेश ला देते हैं। ये श्री गणेश का काम है। आपने देखा होगा कि लोग कितनी भी जल्दी में हों तब भी श्री गणेश का मन्दिर देखते ही नमस्कार कर लेंगे। सिद्धिविनायक के मन्दिर में भी कितनी बड़ी लाइन लगती है। परन्तु उससे कोई लाभ है ? वह करके तब ही फायदा होगा जब आपमें आत्मसाक्षात्कार आया होगा। अगर आप में आत्मसाक्षात्कार आया नहीं तो आपका परमात्मा से कनेक्शन (सम्बन्ध) नहीं होगा। कौन झूठा गुरू है, कौन सच्चा गुरू है, ये भी आपके समझ में नहीं आएगा। मतलब आपमें ये जो बीज श्री गणेश का है वह कुण्डलिनी उठने पर उसको सर्वप्रथम समझा देते हैं और ये कुण्डलिनी दिखा देती है उस मनुष्य को कौन सी तकलीफ है।

अगर किसी को Liver (जिगर) की तकलीफ होगी तो वह (कुंडलिनी) वहाँ जाकर धप्धप् करेगी। आपकी आँखों से दिखाई देगा। अगर आपका नाभिचक्र पकड़ा हुआ होगा या नाभिचक्र पर पकड़ आयी होगी तो नाभिचक्र के पास कुण्डलिनी जब उठेगी तब आप अपनी आँखों से उसका स्पंदन देख सकते हैं। किसी व्यक्ति को अगर भूतबाधा होगी तो वह पूरी पीठ पर जैसे धप्धप् करेगी। आपको आश्चर्य होगा ! हमने उस पर फिल्म ली है। कुण्डलिनी हमसे जागृत होती है इसमें कोई शक नहीं है। कुण्डलिनी उठती है परन्तु अगर श्री गणेश तत्व खराब होगा तो श्री गणेश उसे फिर नीचे खींच लेते हैं। वह ऊपर आयी हुई भी वापस नीचे आ जाएगी। मतलब सर्वप्रथम आपको श्री गणेशतत्व सुधारना पड़ेगा।

कुण्डलिनी जागृत होने पर हाथ में ठंडी हवा आनी चाहिए। किसी किसी लोगों में बहुत गरमी होती है। वह श्री गणेश तत्व के खराब होने से होती है। दिल्ली के पास रहने वाले एक आदमी ने मुझे तार दिया था कि किसी विकृति के कारण वह यहाँ से वहाँ इतना भागता था कि जैसे उसे हजार बिच्छू काट रहे हैं। वह कहता था श्री माता जी महीना हुआ मुझे इस तकलीफ ने ऐसा सताया है, जैसे बिच्छू काट रहे हैं। तब मैंने कहा दो मिनट बैठिए। उनसे बिल्कुल बैठा नहीं जा रहा था। तब मैंने उनके पास जाकर उन्हें शांत किया पाँच मिनट में। इसका कारण ये पृथ्वी माता। वे जमीन पर खड़े थे। आप आज जमीन पर बैठे हो मुझे बहुत खुशी हुई। आज बिल्कुल सभी बातें मिल गयी हैं। उस पृथ्वी माता ने उनकी सारी गरमी खींच ली। अब आप कैसे पृथ्वी माता से कहेंगे कि हे पृथ्वी माता ! आप हमारी सारी गर्मी निकाल लीजिए। वह नहीं निकालेगी, पर सहजयोगी की वह निकाल लेगी। उसका कारण है कि एक बार श्री गणेश तत्व आपमें जागृत होने पर वही तत्व इस पृथ्वी में होने के कारण, उसी तत्व पर यह पृथ्वी चलने के कारण, वह सब खींच लेती

है। और इसीलिए अपने में यह तत्व जागृत रखना चाहिए और वह पवित्र रखना चाहिए। इतना नहीं सहजयोग में वह सहजयोगी जो पवित्रता की मूर्ति है उसे चलाने वाला बादशाह श्री गणेश है; उस देश में वह राज्य करता है। ऐसे श्री गणेश को तीन बार नमस्कार करके उसका पावित्र्य अपने में लाने का हमें प्रयत्न करना चाहिए।

अब जो बातें करनी नहीं चाहिए और जो लोग कहते हैं उनका बहुत बोलबाला हुआ है। और इसी तरह बहुत से तान्त्रिकों ने भी हमारे देश में आक्रमण किया है। उनका आक्रमण राजकीय नहीं है, फिर भी वह इतना अनैतिक और इतना घातक है कि उस की तकलीफें हम आज उठा रहे हैं। इन तांत्रिकों सारी गंदगी फैला रखी है। इसका कारण ये है कि उस समय के राजा लोग बहुत ही विलासी, बेपारवाह थे। इस तरह के लोगोंके पैसोंपर तान्त्रिक ने मजा उड़ाया। ज्यादा पैसा होने से यही होता है। सबसे पहले श्री गणेश तत्व खराब। पैसा ज्यादा होने से वह पहले श्री गणश तत्व के पीछे पड़ता है। जवान लड़कियों के पीछे पड़ना, छोटी-अबोध लड़कियों को सताना, ये सब श्री गणेश तत्व खोने की निशानियाँ हैं। ये तान्त्रिक लोग भी यही करते हैं। कोई अबोध नारी दिखायी दी कि उसे सताना। कोई भी अबोध मनुष्य दिखायी देने पर उसे मारना। अपनी भी अबोधिता खत्म करना। इससे मालूम होता है कि ये विलासी लोग परमात्मा से दूर रहे। इसी प्रकार अनेक कर्मठ लोग जिन्होंने परमेश्वर के पास जाने का बहुत प्रयत्न किया, फिर भी परमेश्वर उन्हें नहीं प्राप्त हुए। अपने में विलासिता को तरह कर्मठता भी बहुत है। महाराष्ट्र में तो कर्मठता कुछ ज्यादा ही है। मतलब सुबह १७ बार हाथ धोने जरूरी हैं। किसने बताया पता नहीं! अगर उस औरत ने १६ बार धोये १७ बार नहीं धोये तो उसे नींद नहीं आएगी। कुछ तो बत्तियां (बाती) बनाना ही चाहिए (महाराष्ट्र में दीपक की बत्तियाँ बनाने का काम बूढ़ी औरतें बहुत करती हैं।) कुछ आमुक लाख जप होना ही चाहिए। परन्तु जो करना जरूरी है, वह उनसे नहीं होता। मतलब बत्तियाँ बनाते समय अपनी बहुओं की या लड़कियों की बुराइयां करना; इस तरह की अजीब बातें हमारे यहां हैं। तो कहना है कि सहजयोग इस तरह के लोगों में नहीं फलने वाला। "ये-या गबाळ्याचे काम नोहे" (ऐसे ऐरे-गैरों का ये काम नहीं)। श्री रामदास जी ने हमारे काम की पूरी पूर्व-पीठिका बनायी है। अगर आपने 'दासबोध' पढ़ा तो आपको कुछ बताने की जरूरत नहीं। ('दासबोध' गुरू रामदास जी का लिखा हुआ मराठी ग्रंथ है)। उन्होंने ये सारा बताया हुआ है और वह सच है। जिस मनुष्य में उतना धैर्य है और जो सचमुच उतनी ऊँचाई का होगा, उसी मनुष्य को सहजयोग प्राप्त होगा। सबको नहीं होगा। मतलब चैतन्य लहरियाँ आएंगी, पार भी होंगे, पर उसमें फलने वाले थोड़े हैं। हमने हजारों लोगों को जागृति दी। क्योंकि लोगों की नजर ही उल्टी तरफ जाती है तो हमें ही जागृत करना पड़ेगा। और वैसा ही समय आया है। अगर अब सहजयोग नहीं हुआ तो ये परमेश्वर के घर का न्याय है ये आपको समझ लेना चाहिए। अब ऐसा कुछ नहीं चलेगा। अभी आपको पार होना पड़ेगा। आगे जो कुछ होने वाला है वहां पर फिर आपको अवसर मिलने वाला नहीं। उस समय 'एकादशरुद्र' आने वाले हैं। एक ही रुद्र इस पूरे विश्व को खत्म करने के लिए काफी है और एकादश माने ग्यारह। जब ग्यारह रुद्र आएंगे तब आप उनकी कल्पना नहीं कर सकते। वे पूरी तरह खत्म कर देंगे। उससे पहले जिन लोगों को चुनना है वह हो जाएगा। वह न्याय अभी सहज-योग से होगा। और लोगों को उसे पाना चाहिए। पर ज्यादातर लोगों का ये होता है कि छोटी-छोटी बातों को लेकर बैठ जाना और चले जाना। अगर हम कुछ पैसे लेते और पाखड रचते तो लोगों को पसन्द आता।

मतलब मनुष्य के अहंकार को बढ़ावा दिया

जाए तो मनुष्य आने के लिए तैयार है। परंतु सहजयोग में तो ये सब सहज घटित होता है। उसे पैसे की जरूरत नहीं है। एक फूल से जैसे फल बनता है, वैसे ही आपका भी होने वाला है। जिस तरह आपको नाक, आँखें, मुंह और ये स्थिति मिली है, उसी तरह "अतिमानव स्थिति" परमेश्वर ही आपको देने वाले हैं, ये उनका दान है। वह आपको जो दे रहे हैं उसमें आप कुछ नहीं बोल सकते। ये भूमिका मानने को मनुष्य बिल्कुल तैयार नहीं है। उसे इतना अहंकार है कि उसे लगता है मैं जब तक सर के बल दस दिन खड़ा नहीं होऊंगा तब तक मुझे कुछ मिलने वाला नहीं है। पहले ये समझना चाहिए कि जिस परमात्मा ने ये अनंत चीजें बनायी हैं उसमें से हम एक भी नहीं तैयार कर सकते। कोई भी जीवंत कार्य आप नहीं करने वाले। परन्तु इतना ही होता है कि पार होने पर मनुष्य को मनुष्य योनि में ही मालूम होता है कि मैं पार हो गया हूँ। ये पहली बात है। दूसरी उसमें वह शक्ति आती है कि जिससे वह दूसरों को पार करा सकता है। उसमें से वह शक्ति बहने लगती है। वह एक-एक करके अनेक हो सकता है। मतलब उसे देवत्व प्राप्त होता है। वह स्वयं देवत्वता में उतरता है। अब ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने अच्छे-अच्छे गुरू बनाये हैं। गुरू बड़े-बड़े हैं, पर उनके शिष्यों में मैंने देवत्व आया हुआ नहीं देखा। उनमें परिवर्तन नहीं हुआ। वे जहां पर हैं वहीं पर हैं। क्योंकि, शिष्य भी हुए तो भय के कारण, या श्रद्धा से वे पूरी तरह घटित नहीं हुए हैं। वह घटना घटित नहीं हुई है। वह परिवर्तन अंदर से नहीं आया है। मतलब इनकी अगर जड़ें ही ठीक करनी हैं या फूल का फल बनाना है तो पूर्णतः बदलना पड़ता है। ऐसी स्थिति अभी किसी की नहीं आयी है। तो कहना ये है कि उसके लिए अपना श्री गणेश तत्व जागृत होना चाहिए। उसे आपको सर्वप्रथम संभालना चाहिए। आजकल के जमाने में हम तरह-तरह के सिनेमा नाटक देखते हैं, विज्ञापन देखते हैं और पढ़ते हैं। कुछ विज्ञापन तो पूरी तरह अश्लीलता से भरे रहते हैं और पूरी तरह की उनमें अपवित्रता है। और ये जो शहरों में हुआ है वही अब गांवों में भी गया है। उससे कुछ लोग इतने दुःखी हैं कि अब रात-दिन उनकी योजना बन रही है कि हम किस प्रकार आत्महत्या करें! यह उनकी स्थिति है। तो आपने उनके मार्ग पर चलते समय ठीक से सोचना चाहिए। उसी प्रकार रूढ़ीवादी लोगों को सोचना होगा हर एक पुरानी बात हम क्यों कर रहे हैं? हम मनुष्य स्थिति तक आये हैं तो हमको इसका अर्थ जानना होगा। जिन्दगीभर वही-वही बातें करने में कोई अर्थ नहीं है। जैसे-जैसे लोग परमेश्वर को तत्वतः छोड़ रहे हैं वैसे-वैसे वे केवल परमेश्वर के नाम से चिपके हुए हैं। सुबह उठकर भगवान को दिया दिखाया, घंटी बजायी कि हो गया काम पूरा। इस तरह का बर्ताव करने वाले लोग हैं। उन्हें समझ लेना होगा कि इस तरह की फिजूल की बातों से परमात्मा कदापि प्राप्त नहीं होंगे। परमात्मा आप में है। उन्हें जागृत करना पड़ेगा और हमेशा जागृत रखना पड़ेगा, और दूसरों मेंवह जागृत करना चाहिए। अगर कुण्डलिनी मां है और श्री गणेश उनकी कृति हैं और श्री गणेश उनकी जड़ है।

आपमें जो कुण्डलिनी है वह श्री गणेश के हाथ पर घूमती है। श्री गणेश के हाथ में क्या है ये आपने देखा होगा। उनके पेट पर एक सर्प बंधा रहता है। यों कहा जाए तो श्री गणेश के चार ही हाथ हैं, परन्तु सच कहा जाए तो उनके अनंत हाथ हैं। जिस हाथ में सर्प दिखाते हैं वही ये कुण्डलिनी है। उसी प्रकार हमारे सहजयोगियों का है। आश्चर्य की बात ये है कि सहजयोगी ये जो पार होते हैं उनके हाथ पर कुण्डलिनी चढ़ती है। उनके हाथ ऊपर करते ही दूसरों की कुण्डलिनी ऊपर उठती है। मतलब अब छोटा सा सहजयोगी लड़का भी कुण्डलिनी ऊपर उठाता है। दो-दो साल के बच्चे, पांच-छः साल के बच्चे आपको कहेंगे आपकी

कुण्डलिनी कहां पर अटकी है, उसकी क्या स्थिति है। मेरी नाती सात-आठ महीने की थीं, तब ये श्री मोदी मेरे यहां आये थे, और उनका आज्ञा-चक्र पकड़ा हुआ था तो बातें करते करते उनकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वह घुटनों पर चलते चलते अपने हाथ में कुमकुम की डिबिया लेकर आयीं और उनके माथे पर कुमकुम लगाया और उनका आज्ञाचक्र उसने छुड़ाया। हर वक्त उसका यही काम होता है। यही मैंने मेरे और सहजयोगियों के बच्चों में देखा है। कितने लोग जन्म से ही पार हैं। जन्म से पार होना कितनी बड़ी बात है। परमेश्वर ने अब शुरूआत की है। मतलब साक्षात जन्म से ही पार अब संसार में पैदा हो रहे हैं। उसके लिए संन्यास की जरूरत नहीं है। जिसे संन्यास लेने की जरूरत लगती है समझो वे अभी तक पार नहीं हुए हैं। पार होने के बाद आप अन्दर से छूटते जाते हैं। ऐसा होने से संन्यास बाहर से लेने की जरूरत नहीं है। यदि अन्दर से संन्यास लिया है तो उसका प्रदर्शन व विज्ञापन करने की क्या आवश्यकता है? अगर आप पुरुष हैं तो आप के चेहरे को देखकर ही लोग कहेंगे ये पुरुष है या स्त्री है। उसका आप विज्ञापन लगाकर तो नहीं घूमते कि हम पुरुष हैं हम स्त्री हैं। उसी तरह ये हो गया। आप मन से संन्यासी हैं तो बहुत कुछ होने पर भी अंदर से इस शरीर में ऐहिक, पारमार्थिक सुख, समाधान वगैरा सहजयोग में सहज मिलता है। उसके लिए संन्यास वगैरा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। संसार से (प्रपंच से) जाने की भी आवश्यकता नहीं है। श्री शंकर जी की जो स्थिति है या कहिए श्री शकर जी ने जो स्थिति प्राप्त करी है उसके लिए उन्हें भी श्री गणेश निर्माण करने पड़े। उसी प्रकार आपको भी श्री गणेश निर्माण करने होंगे।

पश्चिमात्य देशों में नयी-नयी मूर्खता पूर्ण कल्पनाएं बनाकर उन्होंने उनके जीवन से अबोधिता खत्म कर दी है। वे कहते हैं, बच्चों ने दुबला-पतला रहनाहै। पुष्ट नहीं होना है क्योंकि उनके आदर्श सिनेमा के अभिनेता, अभिनेत्रियां है। वहाँ पर सभी तरह की सुभत्ता और सुविधा होते हुए भी वहाँ के लोग बच्चों को प्यार नहीं देते। छोटा बच्चा जन्मने पर उसकी माँ उसकी हिन्दुस्तानी माँ की तरह परवरिश नहीं करती, उसे एक कमरे में डाल देती है। इसीलिए बचपन में वहाँ के बच्चों को माँ की ममता व प्यार नहीं मिलता।

मजे की बात देखिए वहाँ की भाषा में 'दूडदूड धावणे' (छोटे बच्चे का मंदगति से क्रीड़ा मय आमोदकारी भागना-दौड़ना) इस क्रिया का प्रतिशब्द ही नहीं है। छोटे बच्चों को वे कभी भागते दौड़ते हुए देखते भी हैं कि नहीं पता नहीं। यहाँ 'दूडदूड धावणे' वात्सल्य रस है। अपने यहाँ श्री कृष्ण का या श्री राम का बचपन का वर्णन पढ़ते समय आनन्द होता है। परन्तु आपको उनकी भाषा में येसु ख्रिस्त का बचपन का वर्णन कहीं नहीं मिलेगा।

श्री गणेश क्या है? और श्री गणेश तत्व क्या है? पवित्रता माने क्या? 'मैं ही सब कुछ हूँ', ऐसा जो समझता है उसका ये श्री गणेश तत्व नष्ट हो जाता है। परन्तु उसका एक सुन्दर उदाहरण है— सन्यास लेना और विवाह नहीं करना। घर से बाहर रहना और दूसरे किसी के साथ सम्बन्ध नहीं रखना। ये भी दूसरे ही लोग हैं। श्रीगणेश तत्व अगर आप में जागृत है तो संसार में रहकर ही आपको परमेश्वर-प्राप्ति होगी और देवत्व चाहिए तो भी संसार में रहना होगा। अगर आपने बहुत तीव्र और कठिन वैराग्य का पालन किया तो ब्रह्मर्षिपद मिल सकता है। परन्तु मुझे ऐसा महसूस होने लगा है कि ब्रह्मर्षि भी बहुत पहुँचे हुए हैं, मैं जानती हूँ उन लोगों को, परन्तु वे अब कुछ करने को तैयार नहीं हैं, उनमें इतनी आन्तरिकता, आत्मीयता नही और वे मेहनत करने को भी तैयार नहीं हैं। मुझे कभी-कभी बहुत दुःख होता है। उनकी भावना है कि ये जो भक्त लोग हैं, उन

भक्तों की अभी तक कुछ भी तैयारी नहीं है। पर, अगर मेहनत की तो हम तैयारी कर सकते हैं और उसे (भक्त को) आगे बढ़ा सकते हैं। बहुत बार मुझे लगता है ये सभी मेरी मदद के लिए अब दौड़कर आयें तो कितना अच्छा होगा। मुझे बहुत मानने वाले एक कलकत्ता के पास हैं, उनका नाम श्री ब्रह्मचारी है और वे बहुत पहुँचे हुए हैं। उन्होंने मेरे बारे में किसी अमेरिकन मनुष्य को कहा कि श्रीमाता जी अब साक्षात आयी हैं तो हम अब उनका काम देख रहे हैं। हमें भी यही काम करना है और कुछ राक्षसों का नाश हम मनन-शक्ति से करते हैं। वे मेरे पास आने पर मैंने उन्हें कहा आप अमेरिका क्यों नहीं जाते ? वे अमेरिका गये परन्तु वहाँ से पाँच दिनों में भाग आये और मुझे कहने लगे, मुझे ऐसे लोगों से नहीं मिलना है, वे एकदम गन्दे लोग हैं। मतलब ये ब्रह्मचारी जैसे लोग मनुष्यों में न रहने की वजह से एकदम 'माणसघाणे (मनुष्य जिसे बदबू आये ऐसा) हुए हैं। ऐसा ही करना चाहिए। ऐसे कोई साधु-सन्त आने पर आप ज्यादा से ज्यादा उनके चरणों पर जाओगे। उनपर श्रद्धा रखोगे, उसके कारण आपकी स्थिति में सुधार आएगा। पर फिर आपके साक्षात्कार का क्या ? क्यों कि उसके लिए हाथ चलाने पड़ते हैं। बच्चे को ठीक करना है, उसे संभालना है तो माँ को गन्दगी में हाथ डालना पड़ता है। अगर वह 'गन्द-गन्द' कहने लगी तो बच्चे को कौन साफ करेगा ? और इसीलिए ये एक माँ का काम है और वही हम सहजयोग में करते हैं। आप सब उसमें नहा लीजिए, उसका आनन्द उठाइये, यही एक माँ की इच्छा है। माँ की एक ही इच्छा होती है, अपनी शक्ति अपने बच्चे में आनी चाहिए। जब तक सामान्यजन को उसका फायदा नहीं होता, जब तक सामान्यजन उसमें से कुछ प्राप्त नहीं करते और जब तक उनको अपनी माँ की शक्तियाँ नहीं प्राप्त होती तो ऐसी माँ का क्या फायदा ? ऐसी माँ न हो तो अच्छा। तो जिन को माँ या गुरु माना जाय, अपने से बड़ा माना जाए, उन्होंने अगर 'स्व' का मतलब नहीं जाना तो आपको उनके जीवन से क्या आदर्श मिलने वाला है ? सहजयोग में 'स्व' का मतलब है, आपकी आत्मा।

मूलाधार चक्र पर श्रीगणेश का स्थान कैसे है, उसमें कुंडलिनी-की आवाज कैसे होती हैं और कुंडलिनी कैसे घूमती है, हर-एक पंखुडी में कितनी तरह-तरह के रंग हैं और वे किस तरह पंखुडी में रहते हैं और सारा शोभित करते हैं, वगैरा बहुत कुछ है। उसका सब ज्ञान आपको मिलना चाहिए। और वह मिलेगा। और उसमें से हम कुछ भी छिपा कर नहीं रखेंगे। हर-एक बात हम आपको बताने के लिए तैयार हैं। परन्तु आपको भी तो पार होकर पुरुषार्थ करना होगा। आपने पुरुषार्थ नहीं किया तो आपको कोई फायदा नहीं होने वाला।

अब पूजा में क्या करना चाहिए यह सवाल लोगों का रहता है। श्रीमाता जी, गणेश का पूजन कैसे करें ? क्योंकि, हम 'परोक्ष विद्या' जानते हैं, जो आपको दिखाई नहीं देता, जिसे नानक जी ने 'अलख' कहा है। उस आँख से हम देखते हैं। जो हमें कहना है, सर्वप्रथम देखिये आप में पावित्र्य है कि नहीं। स्नान वगैरा करना ये तो है ही, परन्तु उसका इतना महत्व नहीं है, वह अगर न भी हो तो कोई बात नहीं। एक मुसलमान भी श्रीगणेश पूजा बहुत अच्छी करता है। आपको आश्चर्य होगा, अल्जीरिया के करीब पांच सौ मुसलमान सहज-योगी हैं। जवान लड़के-लड़कियां पार हुए हैं। परन्तु उनका प्रमुख जो है, उसका नाम है श्री जमेल और वह श्री गणेश पूजा इतनी सुन्दर करता है कि देखने लायक। श्री गणेश को रखकर स्वयं उनकी सुन्दर पूजा करता है। मतलब सहजयोग में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी आते हैं और फिर उनके देव-देवता कैसे सहजयोग में हैं, वह उसमें दिखाया है। अब ये श्री गणेश तत्व

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/81

आज्ञाचक्र पर आकर श्री येसू क्रिस्त के स्वरूप में संसार में आए हैं। देवी महात्म्य, अर्थात देवी भागवत, जो मार्कण्डेय जी ने लिखा है, ये आप पढ़िये। उसमें जो श्री महाविष्णु का वर्णन है, वह आप पढ़िये। उन्होंने कहा है, श्री राधा जी ने अपना पुत्र तैयार किया था, जिस तरह श्री पार्वती जी ने किया था। परन्तु श्री गणेश तत्व उनमें मुख्य तत्व है और उस श्री गणेश तत्व पर आधारित जो पुत्र बनाया था वह इस संसार में श्री येसु ख्रिस्त बनकर आया। अब 'क्रिस्त' क्योंकि, राधा जी ने बनाया था इसलिए कृष्ण के नाम पर वह श्री क्रिस्त हुआ। और यशोदा है वहाँ, इसलिए येशू। और इसी तरह उन्होंने ये जो गणेश तत्व है, उसको पूर्ण रूप से अभिव्यक्त किया, वह श्री ख्रिस्त स्वरूप में है। अब ये अपने आपको क्रिश्चन कहने वालों को मालूम नहीं है कि वे येशु ख्रिस्त पहले श्री गणेश थे। और ये श्री गणेश तत्व का आविर्भाव है वह अब एकादशरुद्र में किस तरह आने वाला है वह मैं आपको बाद में बताऊंगी। कहने का मतलब है कि मूलाधार चक्र पर जो श्री गणेश परशु हाथ में लेकर सबको धाड़-धाड़ मारते थे वही आज्ञा चक्र पर आकर क्षमा का एक तत्व बन गये। क्षमा करना ये मनुष्य का सबसे बड़ा हथियार है। यह एक साधन होने से उसे हाथ में तलवार भी नहीं चाहिए। केवल उन्होंने लोगों को क्षमा किया तो उन्हें कोई तकलीफ नहीं होगी। इसलिए आजकल के जमाने में सहजयोग में जिसका आज्ञाचक्र पकड़ता है उसे हम इतना ही कहते हैं, "सबको माफ करो"। और उससे कितना फायदा होता है, वह कितनों को पता है? और सहजयोगी लोगों ने उसे मान्यता दी है। देखा है, सब कुछ सहजयोग में प्रत्यक्ष में है। अगर आपने क्षमा नहीं की तो आपका आज्ञाचक्र नहीं खुलने वाला, आपका सिरदर्द नहीं जाने वाला और आपका भार भी नीचे नहीं आनेवाला। इसीलिए क्षमा करना जरूरी है। क्योंकि जब तक नाक नहीं पकड़ो तब तक मनुष्य कोई बात मानने के लिए राजी नहीं है। इसीलिए ये सभी बीमारियाँ आयी हैं, ऐसा मुझे लगने लगा है। क्योंकि, कितना भी मनुष्य को समझाओ फिर भी वह एक पर एक अपनी बुद्धि चलाता है। इसका मतलब है आपको अभी अपने आपका अर्थ नहीं मालूम हुआ है। आपका संयन्त्र जुड़ा नहीं है। पहले उसे जोड़ लीजिए। पहले आत्म-साक्षात्कार पा लीजिए, यही हमारा कहना है। उसमें अपनी मत चलाइए। जो विचारों से, पुस्तकें पढ़कर नहीं होता, वह अन्दर से होना चाहिए। ये घटना घटित होनी चाहिए। कभी-कभी इतने महामूर्ख लोग होते हैं, विशेषत: शहरों में, गांवों में नहीं। वे कहते हैं, अजी हमारा तो कुंडलिनी जागरण हुआ ही नहीं है। देखिए हम कैसे? मतलब बहुत अच्छे हैं आप। क्या कहने? अगर आपका कुंडलिनी जागरण नहीं हुआ है तो आप में कोई बहुत बड़ा दोष है। शारीरिक हो, मानसिक हो, बौद्धिक हो, उसे निकलवा लीजिए। वह कुछ अच्छा नहीं है। साफ होना पड़ेगा। साफ होने के बाद ही आनन्द आने वाला है। यह जानना होगा। फिर सब कुछ ठीक होगा।

अब जो अहंकार का भाव है व श्री गणेश जी के चरणों में अर्पण कीजिए। श्री गणेश की प्रार्थना करिए, 'हमारा अहंकार निकाल लीजिए।' ऐसा अगर आपने उन्हें आज कहा तो मेरे लिए बहुत आनन्द की बात होगी क्योंकि, श्री गणेश जैसा सबका पुत्र हो, ऐसा हम कहते हैं। उनके केवल नाम से हमारा पूरा शरीर चैतन्य लहरियों से नहानेलगता है। ऐसे सुन्दर श्री गणेश को नमस्कार करके आज का भाषण पूरा करती हूँ।

('भक्ति-संगम', अप्रैल १९८३ में मुद्रित मराठी भाषण का हिन्दी अनुवाद)

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 7.00, Annual Subscription Rs. 30.00 Foreign [By Airmail £ 7 $ 14]